Chapter-6

षष्ठ अध्याय

÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷

खण्ड काव्य

xxxxxxxxxxxx

पूर्ववर्ती विवेचन में हम स्पष्ट कर चुके हैं कि जिस प्रकार महाकाव्य प्रबन्धकाव्य का ही एक भेद है उसी प्रकार खण्डकाव्य भी प्रबन्ध काव्य का ही एक भेद है. सम्बन्ध निर्वाह तथा कथागत सूत्रबद्धता के दृष्टिकोण से इसका वस्तु संगठन महाकाव्य की भाँति ही है, किन्तु इसकी कथा जीवन के किसी एक पहलू, एक परिस्थिति अथवा एक घटना या प्रसंग से संबंध रखती है. वीर काव्यों की कोटि में आने वाले मुख्य खण्डकाव्य इस प्रकार हैं...

" सिद्धराज ", " सिंहद्वार ", " विकट भट ", " गौरावध ", " प्राणार्पण ", " शूली और शान्ति ", " स्वतंत्रता की बलिवेदी ", " कर्ण ", " सेनापति कर्ण ", रश्मि रथी ", " प्रण-भंग ", " युद्ध ", " जय हनुमान ", " तुमुल ", " रणचण्डी ", " शक्ति ".

सामग्री के आधार पर ये रचनायें दो प्रकार की हैं..

§ क§ ऐतिहासिक.

§ ख§ पौराणिक.

§ क § ऐतिहासिक वीर काव्यों के अन्तर्गत आने वाले खण्ड काव्य..
सिद्धराज §संवत् 1993§, सिंहद्वार §सन् 1956 ई0§,
विकट भट §संवत् 1985§, गौरावध § सन् 1956 ई0§,
प्राणार्पण §सन् 1962 ई0 §, शूली और शान्ति §1968 ई0§,
स्वतंत्रता की बलिवेदी §सन् 1962 ई0§.

-- इन खण्ड काव्यों का भी निम्नलिखित प्रकार से अन्तर्विभाजन किया जा सकता है.....

1. मध्यकालीन ऐतिहासिक कथानक पर आधारित ---
सिद्धराज, विकट भट, सिंहद्वार, गौरावध.

2. समसामायिक राष्ट्रीय चेतना से ग्रहीत कथानक पर आधारित -----

प्राणार्पण, स्वतंत्रता की बलिवेदी, मूली और शान्ति.

§ ख § पौराणिक वीर काव्यों के अन्तंग आने वाले खण्डकाव्य....

कर्ण §सन् 1952§, सेनापति कर्ण §सन् 1958§, रश्मिरथी §सन् 1951§, प्रण भंग § सन् 1929 ई0§, युद्ध, ~~जयहनुमान~~ जयहनुमान § सन् 1956 ई0 §, तुमुल §सन् 1948§, शक्ति § सन् 1927§, रणचण्डी §सन् 1961 ई0§.

इन पौराणि खण्डकाव्यों को भी इस प्रकार अन्तर्विभाजित किया गया है ।

1. महाभारत से ग्रहीत कथानक पर आधारित खण्डकाव्य...

   कर्ण, सेनापति कर्ण, रश्मिरथी, प्रणभंग.

2. रामायण से ग्रहीत कथानक पर आधारित खण्डकाव्य...

   तुमुल, जयहनुमान.

3. शक्ति की प्रतीक दुर्गा पर आधारित खण्डकाव्य...

   शक्ति, रणचण्डी.

प्रस्तुत अध्याय में हमारे अध्ययन के अंतर्गत आने वाले खण्डकाव्यों का विवेचन मुख्यतः इनकी कथावस्तु, चरित्र चित्रण एवं रस योजना की दृष्टि से किया जायेगा. चरित्र चित्रण की दृष्टि से केवल उन्हीं पात्रों का चयन किया गया है जिनकी मूलवृत्ति वीर रसात्मक है, वीरत्व को भी व्यापक अर्थ में ग्रहण किया गया है और इसके अन्तर्गत दानवीर, दयावीर, धर्मवीर, कर्मवीर आदि सभी वीरों की कोटियों का समावेश किया गया है. रस के अन्तर्गत केवल वीर का ही विवेचन- विश्लेषण किया गया है ।

§क§ ऐतिहासिक खण्डकाव्य

वीर रसपूर्ण ऐतिहासिक खण्डकाव्यों के उपर्युक्त वर्गीकरण से स्पष्ट है कि मध्यकालीन ऐतिहासिक कथानकों पर आधारित खण्डकाव्यों की संख्या समसामयिक चेतना से आधारित खण्डकाव्यों की संख्या से अधिक है. वीरता की आधार भूत प्रवृत्ति महमूद गजनवी से लेकर पूरे मध्यकाल में परिव्याप्त है. ध्यानपूर्वक देखा जाय तो इस कालखण्ड की समय सीमा भी आधुनिक काल की अपेक्षाकृत पर्याप्त विस्तृत है. दूसरी ओर स्वतंत्रता की रक्षा के लिए हुए युद्धों एवं जन-संघर्ष की परम्परा को भी मध्यकालीन भारतीय इतिहास में खोजा जा सकता है. पूर्ववर्ती विवेचन में हम यह दृष्टिगत कर आये हैं कि वीर काव्यों के सर्जन में भारतीय जनता की वीर पूजा की मनोवृत्ति के साथ प्रधानतः ब्रिटिश पराधीनता के युग की राष्ट्रीय चेतना एक सशक्त प्रेरणा बनकर क्रियाशील रही है. इस राष्ट्रीय चेतना के साथ-साथ सांस्कृतिक जागरण ने कवियों को संघर्षशील अतीत की ओर आकृष्ट किया होगा जो स्वाभाविक ही प्रतीत होता है. कवियों ने प्राचीन और मध्यकालीन संघर्षों की स्मृति को जनमानस में जाग्रत कर उनमें उत्साह, साहस एवं कर्तव्यनिष्ठा के भावों को संचरित किया. मध्य-कालीन एवं आधुनिक इतिहास पर आधारित वीर काव्यों की रचना की पृष्ठभूमि में यही चेतना कार्यरत रही है जिसे इन दोनों प्रकार के खण्ड-काव्यों के अन्तर्गत दृष्टिगत किया जा सकता है ।

1. मध्यकालीन ऐतिहासिक कथानक पर आधारित खण्डकाव्य :-

यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि मध्यकालीन इतिहास पर आधारित " विकट भट ", " सिद्धराज ", " सिंहद्वार ", एवं " गोरा बध " हैं. चारों के नायक एवं आधिकारिक कथाएँ ऐतिहासिक हैं. इनमें से प्रथम दो स्वतंत्रता पूर्व एवं अन्य स्वातंत्र्योत्तर युग में रचित हैं. विवेचनगत सुविधा के विचार से इन खण्डकाव्यों पर अलग- अलग विचार

किया जायेगा. इन कृतियों में मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित " विकट भट " ﴾ संवत 1985 में प्रकाशित ﴿ एक अतुकान्त खण्डकाव्य है जिसमें वीर दर्पपूर्ण अनेक उक्तियाँ आती हैं किन्तु वीर रस की अपेक्षाकृत करुण रस का परिपाक अधिक मनोज्ञ एवं प्रभावशाली है. इसमें वीरोल्लास भरी अनेक कृतियाँ हैं, परन्तु उनकी समुचित अभिव्यंजना का अभाव है. इसका कथानक रोचक, राजपूती आन और स्वाभिमान तथा मार्मिक प्रसंगों से परिपूर्ण है. इसकी शैली अतुकान्त छन्दों की है. चरित्र सृष्टि की दृष्टि से सामन्ती चरित्र को देवी सिंह और विजय सिंह के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है. सबलसिंह के चरित्र में वीरत्व का प्रस्फुटन अवश्य है परन्तु यह सम्पूर्ण काव्य को वीर रस प्रधान बनाने में सफल नहीं होता क्योंकि वीरत्व का पर्यवसान करुण में ही होता है. अतः " विकट भट " को छोड़कर शेष कृतियों पर विस्तार से विस्तार किया जा रहा है ।

सिद्धराज

मैथिलीशरण गुप्त के मध्यकालीन वीर सिद्धराज का प्रकाशन संवत् 1993 में हुआ. कथा का प्रारंभ मंगलाचरण से होता है. पाटन का राजा जयसिंह अपनी माता के आदेश से सोमनाथ यात्रा पर लगाये गये राजकर की आज्ञा को रद्द करके अपनी मातृभक्ति का प्रमाण देता है. इसी बीच सिद्धराज की अनुपस्थिति में पाटन पर मालवराज नरवर्मा आक्रमण करता है और इसके फलस्वरूप जयसिंह सोमनाथ यात्रा से लौटकर नरवर्मा पर प्रत्याक्रमण कर देता है. वर्षों तक युद्ध होता रहता है. नरवर्मा स्वर्ग सिधार जाता है और उसका पुत्र यशोवर्मा अवन्तिका का राजा बनता है एवं जगदेव से प्रेरणा पाकर वह युद्ध बंद नहीं करता. आशाराज और जगदेव दोनों द्वन्द्व युद्ध में आहत होते हैं और जयसिंह अवन्तिनाथ बनकर पाटन लौट आता है. अब सिद्धराज सिन्धुराज की

कन्या रानकदे पर आसक्त होकर उसे प्राप्त करना चाहता है परन्तु इससे पहले ही सोरठ राज खंगार उसे अपनी पत्नी बनाकर दो पुत्रों की माता बना देता है. अपने आहत अपमान का बदला लेने के लिए वह सोरठ राज पर आक्रमण कर देता है. खंगार युद्ध में मारा जाता है और उसके दोनों पुत्रों का बध जयसिंह बड़ी निर्दयता से करता है. पति के साथ ही रानक-दे सती हो जाती है. वह नरवर्मा के साथ अपने पुराने वैर का शोध कन्या कांचनदे को अर्णोराज को देकर करता है. अन्त में मदनवर्मा से मैत्री करके अपने राज्य और मातृभूमि को एक समृद्ध राष्ट्र बनाने की योजना बनाता है. वह अब समझ जाता है कि पारस्परिक युद्धों से यद्यपि शौर्य का विकास होता है परन्तु दूसरी तरफ शक्ति का ह्रास भी कम नहीं होता. वह आधुनिक सांस्कृतिक समन्वय की धारणी को वाणी भी देता है ।

समीक्षा

" सिद्धराज " का कथानक अत्यन्त रोचक एवं सुरुचिपूर्ण है, कथा का विकास क्रमबद्ध एवं सुसंगत है. कथाकार अपने पाठकों को उत्सुक बनाये रखता है. " आ गया प्रसंग वह भाग्य या अभाग्य से " जैसी पंक्तियाँ लिखना आरम्भ में ही आगे का आभास दे देना है. [1] इसका इतिवृत्त ऐतिहासिक है जिसका उल्लेख कवि ने स्वयं निवेदन में दिया है..

" पुस्तक में जो घटनाएँ हैं, वे ऐतिहासिक हैं. परन्तु उनका क्रम संदिग्ध है. इसलिए लेखक ने उसे अपनी सुविधा के अनुसार बना लिया है. जो अंश काल्पनिक हैं, वे आनुषंगिक हैं और उनसे ऐतिहासिकता में कोई बाधा नहीं आती । " [2]

सामग्री के लिए कवि ने श्री गौरीशंकर हीराचन्द जी ओझा, कन्हैयालाल मुंशी एवं रानकदे के सम्बन्ध में विशेष जानकारी एच० पी०

शाह के एवं श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य के अंग्रेजी ग्रंथ " मध्ययुगीन भारत " हिन्दी अनुवाद से प्राप्त की है । [3]

सिद्धराज की आधिकारिक कथा को विस्तार देने के लिए अर्णोराज एवं कांचनदे, क्षेत्रवन्ती के क्षेत्रवर्मा आदि की प्रासंगिक कथाएँ आयी हैं. कथावस्तु की एक उल्लेखनीय विशेषता उसमें वर्तमान राष्ट्रीय- सांस्कृतिक उद्देश्य की उदात्तता की है. इसकी दूसरी विशेषता यह है कि इसमें रानकदे एवं कांचनदे के माध्यम से प्रेम और श्रृंगार को चेतना का रंग अवश्य भरा गया है किन्तु वीरता, साहस एवं कर्तव्य परायणता के सामने यह चेतना दबी हुई-सी प्रतीत होती है. मार्मिक प्रसंगों की अवधारणा भी इसकी कथावस्तु की तीसरी उल्लेखनीय विशेषता है. इसमें जयसिंह की आत्महंता, रानकदे का सती होना एवं पुत्रों का बध आदि प्रसंग मार्मिक कहे जा सकते हैं. यह उल्लेखनीय है कि इसमें वीरता, साहस, धैर्य आदि के उदात्त प्रसंगों की योजना पर्याप्त मात्रा में हुई है. इसमें तत्कालीन भारत की राजनैतिक परिस्थिति का चित्रण हुआ है. जयसिंह एक क्षत्र साम्राज्य की स्थापना के आदर्श से प्रेरित होकर युद्धोन्मुख होता है, पर अंत में सांस्कृतिक संगठन की अनिवार्यता को स्वीकार कर लेता है.

चरित्र चित्रण

इस खण्डकाव्य में जयसिंह, जगदेव, मीनलदे, रानकदे, कांचनदे, अर्णोराज, मदनवर्मा, क्षेत्र वर्मा, नरवर्मा, यशोवर्मा आदि पात्रों का वर्णन हुआ है. " सिद्धराज " जयसिंह के अतिरिक्त सभी पात्र अत्यन्त गौण है और प्रसंग विशेष में ही प्रकट हुए हैं. वस्तु विवेचन के अन्तर्गत उनकी चारित्रिक विशेषताओं का यथास्थान उल्लेख हुआ है. अतः यहाँ केवल जयसिंह के ही चरित्र का उद्घाटन किया गया है ।

जयदेव सोलंकी शशांक कर्णदेव और मीनलदे का पुत्र है. तीन वर्ष

की अवस्था में ही पिता कर्णदेव का स्वर्गवास हो गया. माता मीलनदे ने ही लालन- पालन किया. वह अत्यधिक रूपवान है.[4] बाह्य सौन्दर्य के साथ-साथ वह हँसमुख प्रकृति का भी व्यक्ति है. इसका पता जयसिंह के पीछे नरवर्मा को मंत्री द्वारा लौटाने की घटना से लगता है.[5] वह बड़ा ही संवेदनशील है जो अपने उत्कृष्ट रूप में नरवर्मा की मृत्यु के समय प्रकाश में आता है, जब वह शोकग्रस्त होकर दाह-संस्कार तक युद्ध को भी रोक देता है.

आर्थिक हानि उठाकर भी यात्रा कर को रद् कर देने वाली पूर्वनिर्दिष्ट घटना उसकी मातृभक्ति की द्योतक है. इसके साथ-साथ इसमें अत्याधिक उदारता एवं धार्मिक सहिष्णुता का गुण वर्तमान है. वह जैन, ब्राह्मण सभी धर्मावलम्बियों के हितचिन्तक स्वरूप को भी प्रकाशित करती है. सिन्धु राज की कन्या रानकदे को देखकर उस पर मुग्ध होकर येन-केन प्रकार से उसकी प्राप्ति का प्रयास सामन्ती चेतना का द्योतक है ।

सिद्धराज एक आदर्श पिता भी है. अर्णोराज को वह बंदी बना-ता है परन्तु अपनी एकमात्र सन्तान कांचनदे के उस पर आसक्त होने पर, पुत्री की प्रसन्नता के लिए उसे अपना दामाद बनाकर शत्रुता को समाप्त कर देता है. उसके चरित्र के इन गुणों के अतिरिक्त वीरता उसके चरित्र का सबसे बड़ा गुण है. युद्धभूमि में अपने प्रतिद्वन्द्वी को पछाड़ने में और युद्ध- कौशल में वह किसी से कम नहीं है.[6] अपनी भूल पर पश्चाताप करना उसके चरित्र को और भी ऊँचा उठा देता है.

रस

यह खण्डकाव्य वीर रस प्रधान है. वीर रस के अतिरिक्त इसमें श्रृंगार की व्यंजना भी की गयी है जो रानकदे एवं कांचनदे के प्रसंगों में दृष्टिगोचर होता है. भक्ति और वात्सल्य सोमनाथ के मंदिर एवं माता

मीलनदे के माध्यम से दर्शाया गया है. करुण रस रानकदे, खंगार, नरवर्मा आदि की मृत्यु के समय द्रष्टव्य है. एकाध स्थल पर हास्य रस को उद्भासित करने का प्रयास दिखाई पड़ता है. वीभत्स रस का वर्णन युद्ध भूमि में हुई हत्याओं के चित्रों में मिलता है तो रौद्ररस युद्धभूमि में वीरों की मुद्राओं एवं प्रयासों में दृष्टिगोचर होता है. नरवर्मा के साथ हुए युद्ध में वीर रस दर्शनीय है-

" तो भी चोट खाये हुये सिंह-सम शूरों ने
खेल- सा दिखाया एक जीवन-मरण का,
× × ×
खड्ग से प्रहार किया क्रुद्ध जगद्देव ने,
और आशाराज ने भी, संग-संग दोनों के
भंग हुए खड्गद्वय खन- खन करके ।
फेंक मूँठ, मार एक दूसरे को मूँठ सी
गिर पड़े दोनों भट माथा फट जाने से,
मानों एक दूसरे को लाल टीका काढ़ के । " [7]

यहाँ युद्ध एवं जगद्देव एवं आशाराज की वीरता का वर्णन दर्शनीय है. कवि ने इस खण्डकाव्य में वीर रस के माध्यम से ब्रिटिश पराधीनता के युग की राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यंजित किया है, जो जगदेव के निम्नलिखित कथन से स्पष्ट है.

" अब भी स्वतन्त्र है अवन्ती निज शक्ति से,
मेरी यह जन्मभूमि जननी जगत में
मेरे प्राण रहते रहेगी महारानी ही
किंकरी न होगी किसी और नरपाल की । " [8]

वीरता के विविध रूपों के प्रकाश में हम इस काव्य के अंतर्गत जयसिंह के युद्धवीर, धर्मवीर, दानवीर आदि रूप आते हैं. इस प्रकार

" सिद्धराज " में वीरत्व एवं राष्ट्रप्रेम की धारा साथ- साथ प्रवाहित हुई है ।

सिंहद्वार

जीवन शुक्ल द्वारा रचित यह खण्डकाव्य वीर रस की उत्कृष्ट कृति है. इसमें ग्यारहवीं शताब्दी के बापा रावल एवं महमूद गज़नवी के युद्ध की घटना को कथावस्तु के रूप में ग्रहण किया गया है. यह खण्ड-काव्य आवाहन, पूर्वाभास, महमूद, सिंहद्वार, प्रांगण, स्वप्न, विदा, समरांगण और अंतःपुर नौ भागों में विभक्त हैं.

" आवाहन " में कवि ने शक्ति चण्डी से बापा रावल की ऐतिहासिक कहानी को काव्यबद्ध करने की शक्ति माँगी हैं. इसके उपरांत कथा का प्रारंभ होता है. " पूर्वाभास " में कवि ने गजनी के आने का वर्णन किया है और उसके द्वारा किए गये नर संहार का हृदयग्राही वर्णन है. " महमूद " में महमूद गजनवी का चरित्र एवं उसका सोमनाथ पर आक्रमण करने का विचार द्रष्टव्य है.

" सिंहद्वार " में सोमनाथ के मंदिर एवं " प्रांगण " में बापा रावल का वर्णन है जिसमें वे ऊँचे सिंहासन पर बैठे हैं और गजनी के हमले के मसले पर विचार विमर्श कर रहे हैं। उसी समय गजनी का दूत राणा के सामने सन्धि के लिए थाल भैंट करता है और घोघागढ़ के मध्य से मार्ग चाहता है ताकि सोमनाथ तक बिना बाधा के पहुँचा जा सके. बापा रावल उसकी यह भैंट अस्वीकार कर देता है और युद्ध मोल लेता है.

" स्वप्न " में बापा रावल घमासान युद्ध को देखते हैं और मंदिर की प्रतिमा को खंडित पाते हैं. ब्रह्म बेला के स्वप्न को सत्य समझकर अपना विश्वास खोने लगते हैं और शैया त्यागकर शिव मंदिर में जाकर प्रण करते हैं कि " महमूद का हाथ काटकर लाऊँगा और उसके गर्व भरे मस्तष्क को अपने पैरों से रौंदूंगा या जीवित उस द्वार पर कभी नहीं

नहीं लौटूँगा. " विदा " में घोघागढ़ तोरण पर सेना की हलचल एवं रावल का कुल गुरु नंदिदत्त को अंतपुर का भार सौंपना, जौहर की चिता में आग लगाना और दाह संस्कार करने का काम सौंपते हैं.

" समरांगन " में महमूद और बापा रावल के युद्ध का वर्णन है जिसमें रावल और उसके सैनिक मारे जाते हैं."अन्त:पुर " में जौहर व्रत का चित्र है. नंदिदत्त चिता को अग्नि देता है और रावल की लाश को ढूँढ़कर सबका अंतिम क्रिया कर्म करता है. महमूद मंदिर की प्रतिमाओं को खंडित कर, धन से अश्वों को लाद बापा की कीर्ति, वीर ललनाओं के गौरव की सराहना करता अपने देश लौट जाता है ।

समीक्षा

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि इस काव्य की मुख्य कथा बापा रावल और महमूद गज़नी के युद्ध से संबंधित है. " सिंहद्वार " के कथानक में गति है. वह उद्दाम वेग से चरम घटना की ओर उन्मुख होता है, और तदुपरान्त चरम घटना की अनुगामिनी घटनाएँ कार्य-व्यापार को अंतिम कार्य की ओर ले जाती हैं. प्रासंगिक कथा के नाम पर कोई भी कोई घटना नहीं है यह कथा उतार-चढाव से युक्त एक एकाकी रेखा के रूप में आगे बढ़ती है. इसकी अधिकांश घटनाओं का क्षेत्र बहिर्जगत है. आन्तरिक भावव्यंजना तो बहुत ही कम है, केवल राष्ट्र हित संबंधी चिन्तन कहीं-कहीं विभिन्न पात्रों के माध्यम् से अभिव्यक्त हुआ है. यह चिन्तन भी व्यक्तिगत न होकर समष्टिगत है. मार्मिक प्रसंगों में जौहर के व्रत का वर्णन ही आता है . इस खण्डकाव्य में गज़नी का अमीर बुतशिकनों का एक समूह था और सोमनाथ की रक्षा के लिए जुआ हर वीर शौर्य का पोषक एक व्यक्ति. कवि ने भूमिका में महमूद द्वारा मूर्ति तोड़ने की घटना को कबीर तथा स्वामी दयानंद सरस्वती के मूर्तिपूजा विरोधी दृष्टिकोण से जोड़ने का प्रयास किया है, [9] किन्तु उनका यह मानना निराधार ही है कि सोमनाथ की मूर्तियों का भंजन न हुआ

होता तो " कालान्तर में कबीर ऐसा निराकार उपासक और दयानंद सरस्वती ऐसा मूर्तिपूज्यहीन आर्यसमाज का जन्मदाता पैदा न होता, यदि सोमनाथ का दर्द समाज के गर्भ में न सो जाता । " " सिंहद्वार " के कवि ने अपनी कथा में कल्पना, शिल्प योजना का परिचय दिया है.

चरित्र चित्रण

इस खण्डकाव्य में महमूद गजनी, बापा रावल, कुलगुरु नंदिदत्त आदि पात्र आये हैं परन्तु कवि ने प्रमुख रूप से रावल के चरित्र को ही उभारा है. सौराष्ट्र में रावल घोघागढ़ नामक गढ़ी का स्वतंत्र सरदार हैं. इसमें देश प्रेम, स्वाभिमान की भावनाएँ कूट- कूट कर भरी हैं. वह एक राजपूत क्षत्रिय है । और उसे अपने क्षत्रिय होने का गर्व है । [10] वह धर्म और अपनी संस्कृति पर मर मिटने वाला है. गजनी अमीर द्वारा सोमनाथ मंदिर की प्रतिमा को खण्ड-खण्ड करने की योजना से परिचित होकर वह आपे से बाहर हो जाता है. जब वीर गजनी की गर्दन को लाने का प्रश्न उपस्थित होता है तब यह सौराष्ट्र सिंह रोष में भरकर ललकार उठता है. [11] वह स्वभाव से क्रोधी है उसके सिंहनाद को सुनकर धरती और आकाश थर-थर कांपने लगता है और दिशाएँ तक हिल जाती हैं [12] इसके साथ ही वह युद्ध की राजनीति में निष्णात है । [13]

बापा रावल में अहं भाव का भी अभाव नहीं है. इसका स्वाभिमान उस समय जाग्रत हो उठता है जब अमीर गजनी उनकी गढ़ी से सोमनाथ जाने का रास्ता मांगता है. बापा दृढ़ प्रतिज्ञ है. वह एकलिंग के सामने प्रतिज्ञा करता है कि महमूद गजनी का सिर काटकर पैरों तले रौंदेगा और अगर ऐसा न कर सका तो जीवित एकलिंग के द्वार नहीं आयेगा और वह अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करने में सफल होता है. बापा रावल अत्याधिक वीर है. वृद्ध होने पर भी उसमें युद्धोन्माद समाप्त नहीं होता और वह पराक्रमी गजनी से टक्कर लेता है. इसके अतिरिक्त

उसे भारत की प्राचीन संस्कृति एवं धार्मिक मान्यताओं पर गहन आस्था है । [14]

इस प्रकार वास्तव में कवि ने रावल को संस्कृति एवं धर्म के रक्षक के रूप में चित्रित किया है ।

रस

यह एक वीर रसपूर्ण काव्य है, जिसमें आद्यन्त युद्धोन्माद का वातावरण लहराता प्रतीत होता है. गज़नी और रावल के युद्ध के प्रसंगों में वीर रस का सुंदर परिपाक हुआ है. इस प्रकार के स्थल पर्याप्त मात्रा में इस काव्य में उपलब्ध हैं. रावल की वीरता अप्रतिम है, वह प्रत्यक्ष रूप में तो शत्रु संहार करता ही है उसके नाम का भी अत्यधिक आतंक है और नाम से ही गज़नी सेना भयभीत हो जाती है--

" उस रावल की तलवार हवा को डसती थी,
अरि की सेना के वीर तड़प कर मरते थे ।
मारता नाम का भय भी था आगे बढ़कर -
महमूद - सैन्य के वीर देख-तन डरते थे । " [15]

रावल के तपोद्दीप्त व्यक्तित्व में उसकी आयु सीमा विलीन हो गई है. [16] रावल और बापा के प्रत्यक्ष युद्ध में वीर रस की गतिशील निर्झरिणी का प्रवाह निम्नलिखित पंक्तियों में द्रष्टव्य है-

" महमूद और बापा आ सम्मुख टकराये,
आ गई धरित्री सूरज की गति को रोक ।
" जै- एकलिंग " " अल्ला-अकबर " दोनों गर्जे,
खिंच गई वार.की धारा, कौन किस को टोके '
गर्जा चौहान वंश बढकर, कोने कांपे,
प्रति उत्तर में महमूद लिए ललकार मिला ।

पलकें मुँदते ही दोनों शूर निहाल हुए,
दो युद्ध सिद्ध योधाओं से इतिहास हिला । " [17]

यहाँ महमूद गज़नी और बापा रावल दोनों ही आलम्बन और दोनों ही आश्रय हैं. महमूद को आलम्बन मानेने पर बापा रावल आश्रय हुए और महमूद की चेष्टाएँ महमूद का बापा रावल से टकराना, अल्ला अकबर कहना, तलवार का खींचना, महमूद का ललकारना, आदि उद्दीपन, बापा का महमूद से टकराना, जै एकलिंग की पुकार, तलवार खींचना, चौहान वंश का गर्जना आदि अनुभाव. यहाँ गर्व, उल्लास, हर्ष, औत्सुक्य आदि संचारी भाव है. उत्साह स्थायी के द्वारा वीर रस का परिपाक होता है. इसी प्रकार बापा रावलके आश्रय मानने पर उसकी चेष्टाएँ उद्दीपन और महमूद की चेष्टाएँ अनुभाव के अन्तर्गत आयेंगी. तथा गर्व, उल्लास, औत्सुक्य, हर्ष आदि संचारी भावों की उत्पत्ति संचारी भाव एवं उत्साह के द्वारा इस अवस्था में भी वीर रस का पूर्ण परिपाक परिलक्षित होता है ।

इसके अतिरिक्त ओज भरी वाणी एवं अन्य रसों में रौद्र, वीभत्स रसों का भी वर्णन कवि ने किया है. इस खण्डकाव्य में युद्धवीर और देश भक्त का ही रूप उभरा है.

गोरा बध

श्याम नारायण " पाण्डेय " कृत " गोरा बध " खण्डकाव्य एक ऐतिहासिक काव्य है, जिसे कविने सात सर्गों में विभक्त किया है. दिल्ली के सम्राट खिलजी को हराने वाला एक निर्भीक बालक है राणा को सोते समय एक स्वप्न आता है जिसमें दुर्ग की इष्टदेवी राजपुत्रों का रुधिर पीना चाहती है. इधर राजा रत्नसेन शिकार को गया वापिस नहीं आता और खिलजी का बंदी बन जाता है . खिलजी संदेश भेजता है कि

राजा रत्नसिंह की मुक्ति तभी हो सकती है जब रानी पद्‌मिनी मेरे महल को शुभोभित करेगी. रानी यह अपमान सह नहीं सकती और राजदाबार में पहुँचकर दरबारियों में उत्साह जगाती है. रानी की चतुराई से गोरा सात सौ सशस्त्र सैनिकों से भरी डोलियों को खिलजी के डेरे में लेकर जाता है और राजा रत्नसिंह को मुक्त करा लेता है . गोरा खिलजी के सैनिकों से लड़ता हुआ वीर गति को प्राप्त होता है. पति को स्वर्ग सिधारे देखकर गोरा की पत्नीभी जौहर व्रत करके पति के पास पहुँच जाती है ।

समीक्षा
====

" गोरा बध " खण्डकाव्य को यदि आधिकारिक अथवा मुख्य कथा के साथ प्रासंगिक कथाओं का समुचित गुंफन की दृष्टि से विचार किया जाये तो यह दृष्टिगोचर होता है कि इस ऐतिहासिक कथा के साथ राणा लक्ष्मणसिंह का स्वप्न, अधिष्ठाती देवी का राजरक्त माँगना आदि प्रासंगिक कथाओं के आधार पर कथा को विस्तार एवं सरसता प्रदान की गयी है. इसमें कथानक की प्रथम विशेषता युद्ध की सजीवता है. दूसरी प्रमुख विशेषता मार्मिक प्रसंगों की प्रतिष्ठा की है जिसमें कवि पूर्णतः सफल हुआ है. रानी की प्रतिक्षा में खिलजी का सजना, एवं व्याकुल होना, गोरा की वीरता, बलिदान एवं गोरा की पत्नी का जौहर आदि प्रसंग है. इस कथानक की तीसरी विशेषता भारतीयता का आदर्श उपस्थित करने की है. उसकी चौथी विशेषता राजनीतिक एवं प्राकृतिम दृश्यों के वर्णन की प्रचुरता की है. कृति के सम्यक्‌ अनुशीलन द्वारा हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इसमें कवि की मौलिक काव्य चेतना उसकी अध्ययनशीलता, समंजस्यमयी सारग्राही प्रतिभा द्वारा तथा कल्पना शक्ति उभर कर सामने आयी है. कथा की परिणति गोराबध एवं उसकी पत्नी की जौहर व्रत में होती है तथापि इसमें करुणा की

परिणति न होकर वीरता ही दृष्टिगोचर होती है, जो इस खण्डकाव्य को वीर रसात्मक की सार्थकता प्रदान करती है ।

चरित्र चित्रण

इस खण्डकाव्य में राणा लक्ष्मण सिंह, राजा रत्नसिंह, खिलजी, रानी पद्मिनी एवं गोरा आदि प्रमुख पात्र हैं परन्तु कवि ने गोरे के चरित्र को ही उभारने का प्रयास किया है, अन्य पात्र वीर रस के चरित्र को उभारने के लिए आये हैं ।

गोरा चित्तौड़ का एक साहसी वीर बालक है जो बचपन से ही वहाँ की धूलि में खेलकर युवा हुआ है, देश के गौरव की रक्षा के लिए वह अपना बलिदान देता है, वह दृढ़ प्रतिज्ञ है और अपनी रानी माता के सामने प्रतिज्ञा करता है कि राजा रत्नसिंह को खिलजी से कारागार से मुक्त करके ही दम लेगा जिसका पालन वह अंत तक करता है, इसके साथ निडरता भी उसका एक अन्य गुण है, दरबान को सोता हुआ पाकर निर्भीक खिलजी के कमरे में पहुँच जाता है और रानी का संदेश देता है, वह वाकपटु भी है जिसका पता खिलजी से वार्तालाप में मिलता है ।

गोरा युद्ध कला में निपुण एक वीर है जिसका पता खिलजी के युद्ध के समय लगता है, युद्ध में उसके पैंतरे को देखकर अरि सेनानी भी आश्चर्य चकित हो जाता हैं, शत्रु को समक्ष देखकर वह वीरता का मूर्तिमन्त रूप प्रतीत होता है । [18] इसकी वीरता की तुलना कवि ने बाज, खगराज, दिनराज से की है,

इस प्रकार गोरा एक वीर राजपुत्र, दृढ़ प्रतिज्ञ और शत्रुओं के दाँत खट्टे करने वाला है, वह अपनी अंतिम साँस तक लड़ता रहता है, वह मेवाड़ के यशः शरीर का एक आकर्षक अंश है, उसने खिलजी के बंदी रावल रत्नसिंह की मुक्ति के लिए, चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी

में सतीत्व के लिए, अपनी पवित्र जन्मभूमि मेवाड़ की मर्यादा के लिए मेवाड़ देवता के चरणों पर अपनी बलि चढ़ा दी, चढ़ती हुई जवानी, उमड़ते हुए सौन्दर्य को पानी की तरह बहा दिया और उसके साथ अपनी प्यारी नववधू की माँग का लाल-लाल सिन्दूर भी ।

रस

श्याम नारायण पाण्डेय वीर रस के प्रमुख कवि है. इस खण्डकाव्य में वीर रस प्रमुख है. करुण रस एवं रौद्र का भी वर्णन कवि ने किया है. इसमें गोरा- बालक की वीरता, राजपूतों की वीरता, सती पद्मिनी की वीरता आदि के अंश भरे पड़े हैं. इस काव्य में ओजपूर्ण वर्णनों की भरमार है. रानी की ओज भरी वाणी [19] गोरा की वाणी आदि के वर्णन भी प्रचुर हैं. इस खण्डकाव्य में गोरा बादल की वीरता अधिकांश स्थलों पर प्रस्फुटित हुई है ।

अद्भुत पराक्रम से युक्त गोरा की वीरता का वर्णन तो सम्पूर्ण काव्य में हुआ ही है गोरा जैसे वीर का संसर्ग पाकर उसकी तलवार भी शत्रु के लिए रणचण्डी बन जाती है और वह शत्रुओं का विनाश करती है. निम्न पंक्तियों में उसकी तलवार की संहारकारिणी शक्ति का ओजस्वी वर्णन हुआ है...

" वाजि-गर्दनों से मिल-मिलकर, छप-छप करने लगी दुधारी ।
गिरी सवारों पर बिजली सी, गोरा की करवाल कुमारी ।।
गरम-गरम शोणित पी-पीकर, वमन सवारों पर करती थी ।
तो भी नहीं सवार-रक्त से उदर-दरी उसकी भरती थी ।।
भूखी वाघिन सी गिरती थी, फिरकी सी दल पर फिरती थी ।
इतनी थी तैराक, पैर के, बिना रक्त-सरिता तिरती थी ।।" [20]

इस खण्डकाव्य में व्यक्तिगत वीरता के साथ-साथ सामूहिक वीरता एवं युद्धवीर एवं कर्मवीर के दर्शन होते हैं. युद्धों का प्रत्यक्ष वर्णन भी वीर रस काव्य की एक विशेषता है जो इसमें पाया जाता है ।

निष्कर्ष

मध्यकालीन ऐतिहासिक कथानक पर आधारित खण्डकाव्यों के अनुशीलन द्वारा यह तथ्य प्रकाश में आता है कि इन चारों खण्डकाव्यों के कथानक राजपूत वीरों के वीरोदात्त चरित्रों को आधार बनाकर लिखे गये हैं. ऐतिहासिक संदर्भ के दृष्टिकोण से ये कथानक उत्तर पश्चिम के तुर्क, अफगान आक्रमणों से लेकर आरम्भिक मुस्लिम राजवंशों की भारत में प्रतिष्ठा के कालखण्ड तक सीमित हैं. यह कालखण्ड युद्धवीरता और राजनीतिक संघर्षों से भरा हुआ है. अस्तित्व के लिए संघर्षरत राजपूत शक्तियों के वर्णन के माध्यम से सम्भवतः इनके कवि सम सामयिक राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत संघर्षों को नयी चेतना देना चाहते थे. प्राचीन से सशक्त प्रेरणा को ग्रहण कर साहित्य मनीषियों ने अपनी लेखनी द्वारा इतिहास की महान आत्माओं और वीरों की जीवन गाथाओं को सजीव रूप प्रदान किया है ।

जैसाकि निर्दिष्ट किया जा चुका है कि " विकट भट " और " सिद्धराज " नामक कृतियाँ स्वतंत्रता पूर्व की हैं और शेष दो स्वतंत्रता के उपरांत की. यह उल्लेखनीय है कि इस समय क्रान्तिकारियों के प्रयास हो रहे थे एवं कांग्रेस के प्रयत्न भी अप्रत्यक्ष रूप से युगीन चेतना पर अपना प्रभाव डाल रहे थे. इन वर्णनों में ओज, साहस एवं शौर्य की मात्रा की प्रधानता है.यह लोकमान्य बालगंगाधर तिलक एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे आर्य समाज के नेताओं का प्रभाव था जिन्होंने देशवासियों में नयी चेतना भरी, उन्हें अपनी शक्ति पहचानने एवं वीर चरित्रों की ओर देखने के लिए प्रेरित किया. इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्राचीन

सांस्कृतिक पुनर्जागरण से प्रेरणा ग्रहण कर वीरत्वपूर्ण वीर रसात्मक खण्ड-काव्यों की रचना हुई जो हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है ।

(2) समसामायिक राष्ट्रीय चेतना से ग्रहीत कथानक पर आधारित

यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि समसामायिक राष्ट्रीय चेतना से ग्रहीत कथानक पर आधारित " प्राणार्पण ", " स्वतंत्रता की बलिवेदी " एवं " सूली और शान्ति " नामक तीन खण्डकाव्य आते हैं. तीनों की आधिकारिक कथायें ऐतिहासिक हैं. प्रथम " प्राणार्पण " अमर शहीद गणेश शंकर " विद्यार्थी " के बलिदान की कथा है और विशेषकर हिन्दू मुस्लिम एकता की यह जिन्दा मिसाल है. " स्वतंत्रता की बलिवेदी " आंचलिक क्रान्तिकारियों को लक्ष्य बनाकर लिखा गया है तो " सूली और शान्ति " सन् 65 के भारत पाक युद्ध का सजीव वर्णन प्रस्तुत करता है. यों देखा जाय तो " स्वतंत्रता की बलिवेदी " राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा संचालित सत्याग्रह आन्दोलन से संबंधित है जिसे कवि ने स्वीकार भी किया है. इस संक्षिप्त विवरण से प्रकट है कि इन खण्डकाव्यों के रचयिता सम सामयिक राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति के लिए सुदूर अतीत के वन- गह्वरों में न भटककर अपने युग के ही उदात्त प्रसंगों एवं घटनाओं को काव्य का विषय बनाया है और इस प्रकार सम-सामयिक जीवन की उदात्त उच्छवासों को समेटने का प्रयास किया है. विषय परिधि में आने वाली कृतियों के माध्यम से कवियों की अभिव्यक्ति क्षमता को यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है ।

प्राणार्पण

बालकृष्ण शर्मा " नवीन " द्वारा विरचित " प्राणार्पण " खण्डकाव्य चार भागों में विभक्त हैं जिन्हें कवि ने गणेश जी की वंदना

की है. इसके द्वितीय गीत में तत्कालीन साम्प्रदायिक विद्वेष तथा उद्वेग की भयावह स्थिति की झलक मिलती है । [21] इस प्रकार कवि ने प्रथम काव्य की पृष्ठभूमि अंकित कर तत्कालीन राजनैतिक तथा सामाजिक स्थिति, राष्ट्रीय भावना, महात्मा गांधी के सत्याग्रह आन्दोलन, स्वाधीनता प्रतिज्ञा पत्र, गांधी इरविन समझौता, भगतसिंह को प्राण दण्ड, गृह- युद्ध, जन जागृति, साम्प्रदायिक दंगे आदि का चित्रण किया है. जहाँ प्रथम सर्ग में कवि ने तत्कालीन परिस्थितियों का भावपूर्ण एवं उत्तेजक वर्णन किया है, वहाँ द्वितीय सर्ग में वस्तु परक एवं राजनैतिक राष्ट्रवाद विषयक चित्रण है. मुख्य कथा अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी के अमर बलिदान से संबंधित है. इसके उपरान्त कवि ने चौबीस मार्च की स्थिति का वर्णन किया है. इस तृतीय अंक में कवि ने गणेश जी को श्लथ तथा चिंतित दिखाया है जो सारी रात विचार विमर्श करते हैं. कवि ने इसी विचार वीथिका में हिंसा, अहिंसा, अंग्रेजी शासकों की उदासीनता, विदेशियों के प्रति भारतीयों का आक्रोश आदि के चित्र प्रस्तुत किए है. दृढ़ प्रतिज्ञ विद्यार्थी जी जन मानस की पीड़ा मुक्ति के लिए कटिबद्ध हो जाते हैं. इस प्रकार कथा को आगे बढ़ाते हुए अन्त में कवि ने गणेश जी की जन-सेवा, वीर भावना तथा आत्मोत्सर्ग का चित्रण किया है. कथा प्रवाह की दृष्टि से यह अन्तिम भाग ही सर्वाधिक सक्रिय तथा दीर्घ है. इसमें कथानक के उत्कर्ष, उसकी सघनता, क्रियाशीलता आदि का समावेश हुआ है.

समीक्षा

बालकृष्ण शर्मा " नवीन " गांधीजी द्वारा संचालित राष्ट्रीय आन्दोलन के एक महान योद्धा तथा विप्लववादी चेतना के कवि हैं. अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी उनके राजनीतिक गुरु ही नहीं, अपितु आरंभ से राष्ट्रीय संस्कार देने वाले तथा उनके जीवन को गति और दिशा देते हुए अमर प्रेरणादायी व्यक्तित्व के रूप में रहे. इसकी रचना भी कवि ने

सन् 1931 ई0 में की, अतः यह उचित ही कहा जायेगा कि गणेश के अमर बलिदान की घटना ने ही काव्य रचना को प्रेरणा दी होगी. अतः इस कृति में प्रत्यक्ष दर्शिता और निजी अनुभूति का गुण स्वयं सिद्ध है ।

इसका कथानक संक्षिप्त है और कवि ने मार्मिक स्थलों को अपनी प्रतिभा एवं कौशल द्वारा रसात्मक बनाया है. इसमें घटनात्मकता कहीं नहीं हैं, केवल भावात्मक चरित्र चित्रण की ही प्रधानता है. चित्रण आँखों देखा होने के कारण अत्यन्त सजीव और मार्मिक है. भारतीय परम्परा के अनुकूल " प्रस्तावना " में कवि ने पहले गणेश जी की वंदना की है. कवि की अभिलाषा, " यही साध है कि तव स्मरण में हो प्रयुक्त जीवन, मन, वाणी " [22] ही इस खण्डकाव्य रचना की प्रेरक है. इसकी एक और विशेषता यह है कि इसमें कवि की व्यापक राष्ट्रीय भावना व राजनैतिक चेतना हमें मिलती है. लक्ष्य प्राप्ति के लिए आत्मत्याग और बलिदान ही श्रेष्ठ साधन है. तत्कालीन काव्य में प्राप्त आशावादिता पूर्ण विद्रोह की चेतना इस काव्य कृति में सम्यक् रूप में विद्यमान है. इस काल खण्ड में कवियों ने संस्कृति के उत्थान के लिए तथा मानवीय चेतना के लिए महापुरुषों के जीवन को अपने काव्य का विषय बनाया. प्रस्तुत काव्य इसी चेतना का परिणाम लगता है । इसमें वीर पूजा की भावना प्रत्येक छन्द में मिलती है. यह काव्य उस युग चेतना (1930-31 की राष्ट्रीय) चेतना को प्रतिबिम्बित करने वाला यह सफल काव्य है. जिस समय का इस काव्य में वर्णन है उस समय तीन प्रमुख घटनाएँ भारतीय जीवन को मथ रही थीं-- क्रान्तिकारियों को प्राणदण्ड, गांधीजी का सत्याग्रह, साम्प्रदायिक विषवृद्धि. प्रस्तुत खण्डकाव्य में कवि ने राष्ट्रीय और सामाजिक युगचेतना को मार्मिकता तथा प्रभावोत्पादकता के साथ प्रस्तुत किया है. समग्र रूप से देखा जाये तो यह कवि की एक सफल रचना है क्योंकि इस चिरस्मरणीय घटना ने भारतीय जनमानस के समक्ष एक ऐसा ज्वलंत आदर्श उपस्थित किया जो अपने आप में अद्वितीय है. सत्याग्रहियों,

राजनीतिज्ञों तथा राष्ट्रभक्तों को ही नहीं, प्रत्युत " कर्ममनीषियों " को भी इस घटना ने झकझोर दिया. उनका मानस आंदोलित हो उठा. उसी मंथन का अमृत हमें नवीन जी की इस कृति के रूप में प्राप्त हुआ.

चरित्र चित्रण

प्रस्तुत खण्डकाव्य एक चरित्र प्रधान काव्य है. विद्यार्थी जी के जीवन के एक बहुत ही छोटे अंश का इसमें चित्रण है. कवि ने नायक के चरित्र के उद्भव और महत्व को अलौकिक दिव्यता प्रदान करके लोकनायक बना दिया है. इसके माध्यम से कवि ने अपने अग्रज, रक्षक, बलिदानी तथा आराध्य को श्रद्धा सुमन अर्पित किये हैं और साथ ही अपने चरित्र नायक का रेखाचित्र भी प्रस्तुत किया है. [23] काव्य नायक गणेश जी के व्यक्तित्व में कवि ने अनन्त करुणा, शताब्दियों के अनुभव तथा मानवता के विकास को रेखांकित किया है ।

इनका हृदय अत्याधिक उदार था. हिन्दू मुस्लिम एकता के कट्टर समर्थक तथा साम्प्रदायिकता के घोर विरोधी थे इसीलिए साम्प्रदायिक दंगे उनकी अन्तरात्मा को झकझोरते हैं. [24] उनकी मान्यता थी कि अपने कर्तव्य एवं धर्म का पालन करने के लिए मृत्यु का भी आलिंगन करना पड़े तो भी निज पथ से झिझकना नहीं चाहिए. उनका कथन है कि भौतिकता की ही क्रीड़ा यह महामरण है तब तो केवल जड़ तत्वों का ही पृथक्करण होगा । [25] गणेश जी में जन कल्याण की भावना कूट-कूट कर भरी थी. अपने साहसिक एवं जनहितकारी कार्यों के कारण ही वे जन-जन के गले का हार बने । [26]

विद्यार्थी जी दृढ़चेता और वीर पुरुष थे. कापुरुषता को इन्होंने कभी गले नहीं लगाया. क्रोधोन्मत रक्त पिपासु मुस्लिम दल को अपनी ओर आता देखकर वे खेत छोड़कर भागना कायरता एवं पाप मानते थे.

उन्होंने मृत्यु का वरण किया किन्तु कायरता को कभी पास फटकने नहीं दिया. कर्म पथ से हटने की अपेक्षा बलिदान होना इस वीर पुरुष ने श्रेयस्कर समझा और शहीद हो गया. विद्यार्थी जी का आत्मोत्सर्ग विशिष्ठ एवं अनूठा था. कवि के अनुसार दुनिया के इतिहास में इस प्रकार का बलिदान मिलना दुर्लभ है. कवि ने इस आत्मोत्सर्ग को ईसा और दधीचि के आत्मत्याग से श्रेयस्कर मानता है । [27] वास्तव में गणेश जी का संपूर्ण जीवन अनुपम बलिदान भावना, कर्तव्य परायणता, साहसिकता, साम्यवादिता, सात्विकता, अतिशय दृढ़ता, मानवतावाद एवं अहिंसा आदि भावनाओं से समलंकृत था.

<u>रस</u>

इस खण्डकाव्य का प्रधान रस वीर है. और इसकी वीरता कर्मवीर या धर्मवीर की कोटि की है. इसके साथ करुण, रौद्र एवं शान्त रस का परिपाक भी यथेष्ट हुआ है. उनके बलिदान से करुण रस की झलक मिलती है किन्तु उसका समाहार आशा- आकांक्षा- भरे वीरोदात्त संकल्पों की भूमिका पर होता है. यह वीरोदात्त भूमिका राष्ट्रीय चेतना की है जिसमें गांधीके अहिंसात्मक सत्याग्रह की पूरी-पूरी छाप अंकित है. [28] स्वर्गीय गणेश शंकर विद्यार्थी के प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं उनकी आंतरिक शक्ति का मूर्तिमन्त रूप भी कवि ने प्रस्तुत किया है एवं गणेश शंकर विद्यार्थी के अहिंसक सहिष्णु बलिदानी रूप का उद्घाटन निम्नलिखित पंक्तियों में किया है...

" किन्तु ताब मेरी क्या, कि आऊँ आज सम्मुख मैं,
शंकर गणेश तेजपुंज बलिदानी के ;
तर्क औ विवाद पड़ जाते हैं शिथिल मेरे,
देखकर दृढ़ इस अहिंसाभिमानी के । " [29]

वीरत्व का प्रदर्शन केवल युद्ध क्षेत्र में ही नहीं होता, इसका रूप आत्म बलिदान, त्याग एवं परमार्थ में भी दिखाई देता है. वीरत्व की पराकाष्ठा आत्मोत्सर्ग के लिए तत्पर गणेश शंकर की निम्न उक्तियों में परिलक्षित होता है--

" मैंने कभी न पीठ दिखलायी आज तक,
खेत छोड़ भागूँ क्यों, बचाऊँ क्यों निज प्राण ?
मरना है एक बार, तब अपने ही हाथों,
आज फहराऊँ मैं क्यों कायरता का निशान ?
यदि ये मदान्ध जन मुझे मार डालें भी तो,
मैं क्यों करूँ अपनी मानवता का अपमान ?
इन्हें रोक, बचाऊँगा उन्हें जो जाते हैं भागे,
जिनका अभीप्सित है मुझे आज प्राण-त्राण । " [30]

वीर रस अपने पूर्ण अवयवों के साथ भगतसिंह और उनके साथियों के फाँसी पर झूलने की घटना एवं इसके द्वारा भारतीय जनमानस के आंदोलित होने में होता है. यथा....

" फाँसी पर झूले भगतसिंह, उनके साथ भी झूल गये,
भारतवासी हो उठे क्रुद्ध, वे अपनी सुध-बुध भूल गये,
भड़की घृणाग्नि, उमड़ी ज्वाला, आवाज लगी, हड़ताल हुई,
विद्रोह जगा, उठ पड़ा द्वेष, जनता की आँखें लाल हुई ,
उन्मत्त विजातियों के प्रति उठ भड़का क्रोधानल अपार,
भारत का शान्त महासागर उफना, उसमें आ गया ज्वार । " [31]

अत्याचारी अंग्रेज आलम्बन उनकी निकृष्टतम चेष्टाएँ भगतसिंह एवं उनके साथियों को फाँसी देना उद्दीपन, भारतवासी आश्रय, उनका क्रुद्ध होना, उनकी घृणाग्नि भड़कना, ज्वाला उमड़ना, आवाजें लगाना,

देश व्यापी हड़तालें होना, उनकी आँखें लाल होना, उनका क्रोध भड़कना, उनके शांत मानस का आन्दोलित होना आदि अनुभाव, उल्लास अमर्ष आदि संचारी भावों से पुष्ट स्थायी भाव उत्साह से वीर रस का पूर्ण परिपाक हुआ है. वीर रस के भेद जो प्रथम अध्याय में दर्शाये गये हैं, उनमें से इसमें केवल उसका एक पक्ष यानि कर्मवीर ही आ पाये हैं. निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि यह राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत वीर काव्य है.

स्वतंत्रता की बलिवेदी

देश की समस्याओं को राष्ट्रीय दृष्टिकोण से देखने वाले श्री जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद का यह खण्डकाव्य भारतीय जनता के स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्षों की कथा को लेकर लिखा गया है. जिसका आधार जलियाँवाला बाग के गोलीकांड से लेकर 1942 ई० तक की राजनैतिक घटनाएँ हैं. पाँच सर्गों में विभक्त इस खण्डकाव्य में कवि ने वीर शिक्षिता नारी श्यामा के हरिपुर में राष्ट्रीय स्कूल, अस्पृश्य मोहन रमा और पुत्र चंदन एवं श्यामा के भाई माधव, भतीजी मृदुला की कहानी को लिया है.

समीक्षा

जलियाँ वाले बाग के गोलीकाण्ड के पश्चात् भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन दो भिन्न चेतना प्रवाहों को लेकर अग्रसर हुआ-- एक तो महात्मा गांधी द्वारा संचालित सत्याग्रह और स्वदेशी आंदोलन तथा दूसरे क्रांतिकारियों द्वारा किये गये आतंकवादी प्रयास. यह हम पूर्ववर्ती अध्यायों में लक्ष्य कर चुके है कि आधुनिक युग का हिन्दी वीर काव्य तथा हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा उपर्युक्त दोनों चेतना-प्रवाहों से जीवन रस ग्रहण करती आयी है. इसका कथानक गांधीजी के सामाजिक, आर्थिक एवं साथ ही राष्ट्रीय प्रयोगों के अधिक निकट है. कवि ने स्वयं ही लिखा है कि..

" इस खण्डकाव्य की विषय-वस्तु मुझे अत्यन्त प्रिय है, वह (विषय वस्तु) अनेक वर्षों तक मेरे जीवन, मन, हृदय और आत्मा के निकट, सक्रिय रूप से, रह चुकी है. उस समय गांधीजी के आवाहन पर, असहयोग-आन्दोलन में संमिलित होकर, शासकीय विद्यालय का बहिष्कार करके मैं राष्ट्रीय विद्यालय का छात्र बना और उसके बाद, भारत के स्वतंत्र होने तक, स्वतंत्रता-प्राप्ति के अहिंसक प्रयत्नों में मेरा विनम्र सहयोग यथा-शक्ति बना रहा.... सन् 1920 में लोकमान्य तिलक के देहान्त ने मेरे हृदय को अत्यन्त भावाभिभूत किया और सन् 1922 में महात्मा गांधी की गिरफ्तारी ने ।..... मुझे यह भी स्वीकार करना चाहिए कि उक्त जन-आन्दोलनों तथा उनकी पृष्ठभूमियों का मेरे हृदय पर बहुत अधिक सांस्कृतिक ऋण-भार भी रहा है और इस खण्डकाव्य को लिखकर मैंने उस ऋण के आंशिक परिशोधन का भी एक विनम्र प्रयास किया है । " [32]

इसके कथानक की उल्लेखनीय विशेषता स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत भारतीय जनता के प्रयासों एवं सामाजिक और ऐतिहासिक स्तर तक गतिमान राष्ट्रीय चेतना की है.

यह निर्विवाद है कि केवल राष्ट्रीय प्रसिद्धि के मूर्धन्य नेता ही इस देश को स्वतंत्र नहीं करा सकते थे, यदि स्थान-स्थान पर आंचलिक क्षेत्रों के सामान्य नेताओं और जनता ने स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्षों में उचित भाग न लिया होता. इस खण्डकाव्य के प्रमुख व्यक्ति वही क्रांतिकारी रहे हैं और प्रतीक रूप में कवि ने काल्पनिक स्त्री पुरुषों को इसका प्रमुख पात्र बनाया है. [33] इसके संक्षिप्त कथानक द्वारा कवि ने मार्मिक स्थलों को अपनी प्रतिभा एवं कौशल द्वारा रसात्मक बनाया है. कवि ने राष्ट्रीय और सामाजिक युग चेतना को मार्मिकता एवं प्रभावोत्पादकता के साथ प्रस्तुत किया है. स्वयं कवि के शब्दों में..

" यद्यपि इस खण्डकाव्य के सभी पात्र, स्थान आदि काल्पनिक हैं, तथापि, इस प्रकार के व्यक्तियों, संस्थाओं और स्थानों के प्रत्यक्ष संपर्क में मैं अपने राजनीतिक, शैक्षणिक और सामाजिक जीवन में आ चुका हूँ. अतः कथावस्तु की दृष्टि से, इस खण्डकाव्य को सत्याश्रित, ऐतिहासिक तथा जीवन- संपर्क युक्त मानने में संकोच का कोई कारण प्रतीत नहीं होता. " 34

समग्र रूप से देखा जाय तो यह कृति महात्मा गांधी के द्वारा किये गये स्वतंत्रता के प्रयासों का दर्पण है ।

चरित्र चित्रण

चरित्र चित्रण की दृष्टि से यह खण्डकाव्य अत्याधिक सफल रचना है. इसमें श्यामा, माधव, रमा, दुर्गा, मोहन, चंदन एवं मृदुला जैसे पात्र आये हैं परन्तु प्रमुख रूप से श्यामा, चंदन एवं मृदुला के ही चरित्र को उभारा गया है.

श्यामा माधव की वीर शिक्षिता बहन है जो दुर्भाग्य से वैधव्य से पीड़ित है. बाल विधवा श्यामा में मानवता की सेवा का गुण कूट-कूट कर भरा हुआ है. गांधीजी के समान इसे भी ईश्वर मंदिर,तीर्थ और मठों, भाषण, कथा भागवत, प्रवचन और उपदेशों में नहीं मिला परन्तु मिला दीन, दलित, शोषित एवं पीड़ित व्यक्तियों में. उसके स्वाभिमान एवं साहस के गुण ने श्यामा में त्यागी जीवन को प्रज्वलित कर दिया. वह दूरदर्शिनी भी है उसे पता है जब भाई के बच्चे नये राष्ट्रीय विद्यालय में पढ़ेंगे तो भाभी दुर्गा की आत्मा भी क्रमशः जाग्रत हो जायेगी और वह भी अंध-रूढ़ियों को छोड़कर एक दिन क्रान्ति पथ की अनुगामिनी बन जायेगी.

वह दृढ़ प्रतिज्ञ है जिसके कारण स्वीकार किये गये कार्यक्रमों को वह पूरा करने की हर संभव चेष्टा करती है. वीर, दृढ़ प्रतिज्ञ के साथ-

साथ श्यामा में स्वाभिमान का गुण भी कूट-कूट कर भरा हुआ है . उसका यह रूप उस समय दृष्टिगोचर होता है जब चंदन, मृदुला, रघुवर एवं बंगाली क्रांतिकारी आपस में विचार विमर्श करते हैं परन्तु श्यामा को आता देखकर चुप हो जाते हैं और बहुत पूछने पर भी उसे नहीं बताते ।

असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने वाली इस वीर नारी ने जन-आंदोलन की चिनगारियों को घर-घर, ग्राम-ग्राम में पहुँचाया और देश की स्वतंत्रता के लिए कार्य किया और उसके लिए जेल यात्रा भी की. वह संप्रदाय या जाति, धर्म के भेद भाव से बिलकुल अछूती थी. दलित जनों का उद्धार किया. [35] वह अपने त्याग, कर्मठता से मर कर भी अमर हो गयी ।

चंदन अस्पृश्य मोहन और रमा का होनहार पुत्र है जो अपनी योग्यता और कर्मवीरता के बल पर ऊँचा उठता है. क्रान्तिकारिणी श्यामा के राष्ट्रीय विद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर वह एक सफल स्वयंसेवक एवं क्रांतिकारी बन जाता है जो देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों तक का बलिदान कर देता है. वह एक प्रेमी भी है. मृदुला के साथ उसका प्रेम सात्विक एवं पवित्र है. माता-पिता की आज्ञा के बिना वह विवाह सूत्र में भी बंधना नहीं चाहता. यह घटना उसकी माता-पिता प्रेम को उजागर करती है. लोकमान्य तिलक की मृत्यु की मर्मस्पर्शी घटना ने चंदन के दिल पर अत्याधिक प्रभाव डाला और वह अंग्रेजों का कट्टर विद्रोही बन गया. सत्याग्रह आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण उसे जेल भी जाना पड़ा ।

चंदन है एक दृढ़ प्रतिज्ञ नवयुवक है. श्यामा मृदुला जैसी विभूतियों को समाप्त करने वाले शासन का अंत करना चाहता है या प्राण देने के लिए तैयार रहता है. उसमें अद्भुत साहस, सहनशीलता, वीरता है. और अपने इसी साहस के बल पर अत्याचारी अंग्रेजी शासक का सामना करता

हुआ उनकी गोलियों का शिकार बन जाता है. [36]

मृदुला माधव और दुर्गा की पुत्री एवं श्यामा की प्रिय भतीजी है जो बुआ के विद्यालय में क्रान्ति की शिक्षा पाकर प्रसिद्ध क्रांतिकारी बनती है. अपने जीवन में भी वह क्रांतिकारी पग उठाती है और वह है अछूत चंदन से प्रणय प्रस्ताव. दृढ़ प्रतिज्ञ होने के कारण वह चंदन के अतिरिक्त किसी का वरण नहीं करना चाहती. उसका प्रेम पवित्र है. चंदन को चोट लगने पर तन-मन-धन से उसकी सेवा कर अभिनव, त्याग, धैर्य और तप का इतिहास बनाया और अपने प्रेमी को मृत्यु के मुख से लौटा लायी । देश प्रेम पर वह अपने प्रेम को न्यौछावर कर देती है. सत्याग्रह एवं कर बंदी के आंदोलन की प्रेरणा पाकर उसने नारियों का नेतृत्व किया और अन्ततः शासन की क्रूरता का लक्ष्य बनी.

इस प्रकार मृदुला एक वीर, साहसी, दृढ़ प्रतिज्ञ और क्रान्तिकारी नारी थी जिसने देश की स्वतंत्रता के लिए आत्मोत्सर्ग कर दिया ।

रस

उपर्युक्त विवेचन से प्रकट है कि मृदुला और चंदन वीर गति को प्राप्त होकर भी अपनी अदम्य वीरता का परिचय देते और बलिदान की प्रेरणा को जगाते हैं. प्रारंभ से लेकर अंत तक इस कृति में उत्साह दृष्टिगोचर होता है. शान्त, करुण, रौद्र रस भी इसमें सहज ही मिल जाते हैं परन्तु सहिष्णु बलिदानी वीरों की चेतना ही कृति में प्रधान रूप से है ।

सूली और शान्ति

मलखान सिंह " सिसौदिया " का यह प्रसिद्ध काव्य अट्ठारह

भागों में विभक्त है जिसके नाम कवि ने इतिहास पट, ईमान, साहस, प्यार, उत्सर्ग, शक्ति, मानवता, आदर्श, निरपेक्षता, निष्ठा, मनोबल, देश-भक्ति, कर्तव्य, शौर्य, करुणा, चिंतन, विवेक और शान्ति आदि दिए हैं. कवि ने कश्मीर की सुषमा का वर्णन करते हुए वहाँ घटित घटनाओं को वर्णित कियाहै. सन् 1947 में भी ब्रिटेन की शह पाकर पाक ने काश्मीर को विजय करने के लिए शस्त्र और शक्ति से हमला कर दिया परन्तु कवि कल्हण की यह बात " कभी न अरि दल को करता कश्मीर नमक भूल गया । उस समय तो संधि हो गयी परन्तु अट्ठारह साल के उपरान्त वह फिर काश्मीर को विजय कर अपने में मिलाना चाहता था और साथ ही अमृतसर, मेरठ और दिल्ली को भी अपने अधिकार में करना चाहता था परन्तु भारतवासियों के सम्मुख यह प्रश्न मुँह बाये खड़ा हो गया कि सीमा का उल्लंघन कर किस प्रकार युद्ध कर अपने ही भाईयों का कत्ल करें. चार अगस्त सन् 1965 के दिन " धनवास " क्षेत्र में दाराकसी गाँव के गूजर मुहम्मदद्दीन ने पाक हमलवारों को देखा. देशभक्त मुहम्मदद्दीन ने चार सौ रुपये की रिश्वत को ठुकरा कर टनमर्ग के थाने में घुसपैठियों की खबर की परन्तु वे सैनिकों के पहुँचने के पहले ही गाँव को तहस नहस कर भाग चुके थे. भारतवासी जाग्रत हो गये और उसने भी उन द्वारों को बंद करने की ठानी जिधर से होकर शत्रु आक्रमण करते थे ।

भारत ने दुश्मन की चौकियों में से " दर्रा हाजीपीर " का लेना आवश्यक समझा. इसके लिए पच्चीस अगस्त को रणजीत सिंह दयाल की अध्यक्षता में भारतीय सैनिकों ने " साँक " की चौकी पर हमला किया. प्रकृति भी उस दिन विरुद्ध थी एवं शत्रु पूर्ण वेग से गोला बारी कर रहा था. अब भारतीय वीर प्रण कर पीछे से लपके और चौकी को जीत लिया.अब वीर दयाल सैनिक चौकी " लुडवाली गली " को सर

करता हुआ हाजीपीर की ओर बढ़ा और उसे भी जीत लिया. केवल भारत के सैनिकों ने ही नहीं देश के हर व्यक्ति ने युद्ध में अपना हिस्सा डाला. जब पाकिस्तान की चौकी हाजीपीर भी विजित हो गयी उस समय उसने अपनी सारी सेना छम्ब जोरिया डिविजन में झोंक दी. इस युद्ध में भारत के हवाबाजों ने अपना कमाल दिखाया. सरगोधा के अविजित राडारको भी , जो भारत की नभ सेना के वीरों को रोक रहा था, तोड़कर एक वीर वायु सैनिक ने विजयश्री प्राप्त की. छम्बजोरियाँ के घमासान युद्ध के पांच दिन उपरान्त भारतने सात सितम्बर को रक्षा के लिए पाक पर हमला कर " थाना बर्की " को जीत लिया.

दस सितम्बर को राष्ट्रपति राधाकृष्णन ने अपने भाषण द्वारा सम्पूर्ण देश के लोगों ने नई चेतना और नयी स्फूर्ति जगायी. ग्यारह सितम्बर को फिर टैकों का निर्णायक युद्ध हुआ जिसमें हवलदार अब्दुल हमीद ने देश भक्ति को मजहब से श्रेष्ठ सिद्ध कर दिया.

स्यालकोट में सभी डिविजन की सेनाएँ संयुक्त होकर लड़ी जिसमें लेफ्टिनेंट कर्नल ए० बी० तारापोर ने साठ टैकों को नष्ट कर दुश्मन को कठिन पराजय दी. सांप्रदायिकता को छोड़ राष्ट्र के हित के लिए राष्ट्र का सम्पूर्ण जनमानस एकत्र हो गया. स्यालकोट के निकट मेजर मुहम्मद अली रजाशेख ने अपने ही अग्रज के विरुद्ध युद्ध कर, छछोगिल की दृढ़ मोर्चाबन्दी को तोड़ " बाटापुर " लाहौर के उपनगर में प्रवेश किया. जिसमें मेजर आशाराम त्यागी ने अपनी शहादत दी. इस प्रकार कई वीरों ने बलिदान देकर पाकिस्तान को हराया.

समीक्षा

यदि इसकी आधिकारिक अथवा मुख्य कथा के साथ प्रासंगिक कथाओं का समुचित गुंफन के आधार पर विचार किया जाये तो यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि इसमें कवि ने भारत - पाक युद्ध की कथा के

साथ खानाकदोश सैदा आदि से संबंधित ही प्रासंगिक है । आधिकारिक कथा इतिहास प्रसिद्ध 1965 के युद्ध पर आधारित है, हाजीपीर का दर्श लेना, छम्बजोरियाँ का युद्ध, सरगोधा का राडार तोड़ना, राष्ट्रपति का भाषण, स्यालकोट रणक्षेत्र का युद्ध, छछोगिल के मोर्चे तोड़कर " बाटापुर " पर अधिकार आदि घटनाओं को कवि ने इतिहास से ग्रहण कर अपनी कल्पना द्वारा इन्हें सँवारा है ।

इस काव्य के कथानक की प्रथम उल्लेखनीय विशेषता उसमें राष्ट्रीय उद्देश्य की उदात्तता की है. द्वितीयत: मार्मिक प्रसंगों की अवधारणा कर उनकी सफलतापूर्वक प्रस्तुति भी उतनी ही महत्वपूर्ण है. दुश्मन की चौकी हाजीपीर लेने में दयाल के शौर्य का वर्णन, भारतीय हवाबाज का नैट विमान सरगोधा के राडार से टकराकर तोड़ना एवं मृत्यु का वरण, मेजर मुहम्मद अलीरजा शेख का देशभक्ति को ऊपर बताना, मेजर आशाराम त्यागी की पत्नी कविता का विलाप, हरीश और हनीफ मित्रों का मिलन आदि मार्मिक प्रसंगों को बड़ी कुशलता एवं मार्मिकता से दर्शाया है । कथानक की तीसरी विशेषता काश्मीर के प्राकृतिक और ऐतिहासिक दृश्यों का सफलतापूर्वक आकलन है. कथानक की चौथी विशेषता राजनीतिक प्रसंगों के समावेश की है. डा० राम विलास शर्मा को यह कथन यहाँ सर्वथा समीचीन है---

" राजनीति पर कविता लिखना आसान नहीं, राजनीति को समझना, राजनीतिज्ञों के दाँव-घात उनकी कूटनीति को समझना और भी कठिन है. श्री सिसौदिया ने इस काव्य में यह कठिन कार्य सफलतापूर्वक करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है. राजनैतिक घटनाओं की उनकी पकड़ सही है। " 36 [अ]

यह उल्लेखनीय है कि इसमें वीरता, साहस, धैर्य आदि उदात्त प्रसंगों की योजना अत्याधिक मात्रा में हुई है. कथानक की परिणति

यद्यपि युद्ध के उपरान्त शान्ति की कामना में होती है तथापि इसमें शान्त रस न दिखाई पड़ वीर रस का ही रसास्वादन होता है जो इसे वीर रस के काव्य की सार्थकता प्रदान करती है. इसमें वीर रस के उपयुक्त ओजपूर्ण पदावली है. कृति के सम्यक अनुशीलन द्वारा हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कवि की मौलिक काव्य चेतना उसकी अध्ययनशीलता, सामंजस्यमयी सारग्राही प्रतिभा तथा कल्पनाशक्ति का ही प्रमाण है. अतः कथावस्तु की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि यह एक सशक्त वीर रसात्मक काव्य है. निश्चय ही यह काव्य युग की बहुत बड़ी आवश्यकता की पूर्ति करेगा.

चरित्र चित्रण

चरित्र चित्रण की दृष्टि से इस काव्य में अनेक पात्र आते हैं. किसी एक को नायक बनाकर कवि ने नहीं लिखा. इस युद्ध में अपनी वीरता, साहस और शौर्य प्रदर्शित करने वाले सभी वीरों को कवि ने अपने काव्य में स्थान दिया है. इसमें गूजर मुहम्मददीन, रणजीत सिंह दयाल, स्क्वैड्रन लीडर कीलर, लेफ्टिनेंट कर्नल ए० बी० तारापोर, फायर मैन चमनलाल एवं मेजर आशाराम त्यागी आदि वीर चरित्रों का समावेश किया गया है जिनका वर्णन क्रमशः किया जा रहा है ।

गूजर मुहम्मद दीन इस काव्य का पात्र है. वह धनवास क्षेत्र के दाराकसी गाँव का रहने वाला है जो नित्य गेल्फ के समतल मैदान भर में अपनी भेड़ बकरियाँ चराता है. वह अत्याधिक गरीब है किन्तु पर्याप्त दूरदर्शी है जब वह कुछ अपरिचित आकृतियाँ देखता है तो समझ जाता है कि कुछ गड़बड़ जरूर है. मुहम्मददीन गरीब अवश्य है पर वह अपना ईमान नहीं बेचता, पाकिस्तानी फौजियों द्वारा रिश्वत दिये जाने पर भी वह अपना ईमान बेचना स्वीकार नहीं करता और मन में ठान लेता है कि मुल्क बेचकर वह गद्दार नहीं कहलायेगा. वह वतन

के प्यार को मजहब से ज्यादा अज़ीज मानता है. वह सूझवान भी है और अपने इस गुण के कारण पाक सैनिकों की आंखों में धूल झोंक निकट चौकी में खबर कर देता है. इस प्रकार कवि ने गूजर के चरित्र में एक वीर, देश प्रेमी, साहसी, दूरदर्शी व्यक्ति का व्यक्तित्व दर्शाया है.

रणजीत सिंह दयाल पंजाब का स्वाभिमानी सपूत है जिसकी रगों में रावी और सतलुज का बलिदानी पानी भरा हुआ है. वह बहुत ही साहसी, तूफानी, अपराजेय, दिलेर और शौर्य का पुतला है. उसके व्यक्तित्व का उद्घाटन कवि ने इस प्रकार किया है....

" वह तूफानी वीर जोश की ज्वाला था,
महाकाल उसको न रोकने वाला था ।
वह न देखता था खाई, खंदक, टीले,
गिनता था न नदी, नद, पर्वत बर्फीले ।
प्रकृति देख उसके तेवर थी डर जाती,
टेढ़ी चितवन देख नियति थी थर्राती ।
निडर चुनौती दे वह आगे बढ़ता था,
क्रुद्ध सिंह-सा टूट शत्रु पर पड़ता था । " 37

यह अत्यधिक निर्भीक वीर है. पच्चीस अगस्त की अंधियारी रात में चौकी लेने के लिए शत्रु पर हमला करने जाता है और अपने साहस का परिचय देता है. वह साहसी ही नहीं दृढ़ व्रती है. वह साँक की चौकी लेने का प्रण करता है और उसे पूरा करता है और अपने साहस के बल पर हाजीपीर की चौकी भी जीत कर उसपर भारत का तिरंगा लहरा देता है ।

छम्बजोरियाँ क्षेत्र में एक ऐसे व्यक्ति का भी उत्सर्ग होता है जो अभी यौवन की देहरी पर पाँव ही रखता है. वह परम देशभक्त है और

देशभक्ति उसकी नस-नस से फूट रही है . रिपु के राडार के भंजन का निश्चय उसके दृढ़ आत्म विश्वास और पौरूष का परिचायक है. वह अपने प्राणों की चिन्ता न करते हुए भी शत्रु का राडार नष्ट कर आत्म बलिदान का सर्वोत्कृष्ट रूप प्रस्तुत करता है ।

स्यालकोट रणक्षेत्र में शहीद होने वाला वीर तारापोर कावेरी और कृष्णा का अभिमानी सपूत है, वह इस क्षेत्र का निर्भीक सेनानी शत्रका विकट किला फिल्लौरा गाँव लेने के लिए यहाँ आया है. वह हर कार्य योजना बद्ध तरीके से करता है. युद्ध करने से पहले वह युद्ध की योजना बना लेता है । वीर तारापोर अदम्य साहसी है वह शत्रु के हमले से तनिक भी भयभीत नहीं होता और अपनी सैनिकों को भी उत्साहित करता है । [38] वह केवल साहसी ही नहीं दृढ़ संकल्पधारी भी है और साथ ही निडर भी, जब उसका टैंक युद्ध में बेकार हो जाता है तो वह पैदल ही गोली और गोलों की बौछारों में कूद पड़ता है और निर्भयता के साथ आगे बढ़ता जाता है. और शत्रु के साठ टैकों को नष्ट कर वजीरअली, जस्सोरा, बुटर आदि चौकियों को जीतता है, इस प्रकार तारापोर के चरित्र में अप्रतिम शौर्य, उत्साह, निर्भीकता आदि का समावेश हुआ है ।

चमनलाल गुरदासपुर रेलवे स्टेशन पर एक साधारण फायर मैन है. उसे कर्तव्य प्राणों से भी अधिक प्रिय है जिसका पता तेल से भरी सत्तर डिब्बों वाली मालगाड़ी को जलते देखकर डिब्बों को काटने का संकल्प करता है. वह अत्याधिक साहसी है और इसी कारण जलती आग में कूद कर डिब्बों को अलगकर देता है ।

मेजर आशाराम त्यागी इच्छोगिल नहर एवं बाटापुर लाहौर के उपनगर में हुए युद्ध में होने वाला शहीद है जिसे तीन गोलियाँ लगीं किन्तु उसने शत्रु के टैकों को नष्ट कर डोगराई का मोर्चा जीत लिया था ।

रस :-

इस काव्य में वीर रस प्रारंभ से लेकर अंत तक पाया जाता है. इसके साथ ही काश्मीर की प्राकृतिक सुन्दरता, रौद्र एवं शांत रस का भी वर्णन मिलता है. सैनिकों के ओज में वीरता का वर्णन मिलता है इसके अतिरिक्त मेजर शेख, कर्नल तारापोर के अदम्य पौरुष का वर्णन भी कवि ने बड़ी सुन्दरता से किया है. यथा--

" इतने ही में गोले का टुकड़ा उन्हें लगा,
जैसे उद्दीप्त शौर्य घायल हो भड़क जगा ।
फिर तो रोक से नहीं केहरी रुकता था,
था जिधर देखता शत्रु, टूट वह पड़ता था । " [39]

शत्रु के साथ रणजीत सिंह दयाल के संघर्ष में वीर रस का पूर्ण परिपाक होता है । [40]

इस काव्य में वीर रस के अतिरिक्त व्यापक राष्ट्रीय चेतना के भी दर्शन होते हैं यथा..

" कस कमर, बाँध मुट्ठी, मिलाकर कदम,
आंध्र, गुजरात, मद्रास, बंगाल क्या
हो गये प्रान्त तैयार सब एक दम ।
था अकेला नहीं राज्य पंजाब का
और काश्मीर प्यारा अकेला न था
एकता की उमड़ जा छनी थी वही,
रंच झगड़ा नहीं था, झमेला न था । " [41]

निष्कर्ष

सम सामायिक घटनाओं पर आधारित खण्डकाव्यों की विवेचना करने के उपरान्त यह देखने में आता है कि इन तीनों खण्डकाव्यों के कथानक

स्वतंत्रता संग्राम में हुई घटनाओं को लेकर लिखे गये हैं जिनमें इतिहास और कल्पना का योग मिलता है. " प्राणार्पण " एवं " सूली और शान्ति " में सर्ग योजना भी ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है. प्रसिद्ध बलिदानी गणेश शंकर विद्यार्थी ने हिन्दू मुस्लिम साम्प्रदायिक झगड़े के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी इसलिए सर्ग को आहुति नाम देना भी उचित ही है. " सूली और शान्ति " में युद्ध की संपूर्ण चेतना को संजोया गया है तो " स्वतंत्रता की बलिवेदी " में कवि ने साधनहीन एवं सामान्य घरों में जन्म लेकर, अपने असाधारण साहस, क्रांति भावना एवं क्रांतिकारिता के कारण, साधारण व्यक्ति भी किस प्रकार अपने जीवन का उच्चादर्श युक्त निर्माण कर सकते हैं इसी तथ्य को दर्शाने का सफल प्रयास किया गया है. इसमें सन् 1920 से लेकर सन् 1942 तक की अहिंसक क्रांति, चेष्टाओं को उल्लेखित किया गया है जिनका महत्व साहित्यिक दृष्टि से भी किसी प्रसिद्ध पौराणिक या प्राचीन ऐतिहासिक घटना से कम नहीं है. इस खण्डकाव्य की रचना कर कवि ने इस ओर साहित्य के अन्य अंगों के लेखकों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है. कवि कहता है..

" साहसी और समझदार साहित्य सेवियों का यह कर्तव्य है कि वे अब मूल्यहीन हीरों के पुराने चिकनेपन को छोड़कर मूल्यवान हीरों के नए खुरदरेपन को चिकना बनाने का यत्न करें । " 42

पूर्ववर्ती दो खण्डकाव्य " प्राणार्पण " एवं " स्वतंत्रता की बलि-वेदी " की राष्ट्रीय आंदोलन से ग्रहीत प्रेरणा स्वयं सिद्ध है, तो तृतीय " सूली और शान्ति " विदेशी आक्रमणों से प्रेरणा लेकर लिखा गया है ।

इन खण्डकाव्यों में केवल इतिहास प्रसिद्ध सत्य घटनाओं को ही काव्य प्रसंगों का आधार बनाया गया है. जहाँ तक कवि कल्पना की स्वच्छन्दता का प्रश्न उठता है उसका उपयोग घटनाओं की व्याख्या

अपने दृष्टिकोण से करने का प्रयत्न किया गया है. " स्वतंत्रता की बलिवेदी " खण्डकाव्य में घटनायें सत्य एवं स्त्री पुरुष पात्र कवि कल्पित हैं. इनमें उत्साह, बलि होने की कामना एवं ओज का प्राधान्य है । इस प्रकार ये खण्डकाव्य वीर रसात्मक काव्यों की कोटि में एक उल्लेखनीय उपलब्धि है ।

पौराणिक कथानकों पर आधारित खण्डकाव्य

वीर रसात्मक पौराणिक खण्डकाव्यों के पूर्वनिर्दिष्ट वर्गीकरण से स्पष्ट है कि महाभारत से ग्रहीत कथानक पर आधारित खण्डकाव्यों की संख्या रामायण एवं दैवी शक्ति पर आधारित खण्डकाव्यों की संख्या से कहीं अधिक है. पूर्ववर्ती विवेचन में हम यह स्पष्ट कर आये हैं कि वीर काव्यों के सर्जन में भारतीय जनता की वीर पूजा की मनोवृत्ति के साथ प्रधानतः ब्रिटिश पराधीनता के युग की राष्ट्रीय चेतना एक सशक्त प्रेरणा बनकर क्रियाशील रही है. इसी राष्ट्रीय चेतना के साथ-साथ ही सांस्कृतिक पुनर्जागरण ने कवियों को संघर्षशील अतीत की ओर आकृष्ट किया जिसका विस्तार से वर्णन हम द्वितीय अध्याय में कर चुके हैं. पौराणिक खण्ड-काव्यों के सृजन में यही चेतना क्रियाशील रही है. आधुनिक हिन्दी काव्य परंपरा में पूर्वकालीन परंपरा में प्रतिष्ठितपात्र पात्रों को ही नहीं काव्य का विषय बनाया गया है, अपितु उपेक्षित और परम्परा से हीन समझे जाने वाले चरित्रों को भी स्थान दिया गया है जैसा कि पौराणिक महाकाव्यों के संदर्भ में हम वर्णित कर चुके हैं. इस चेतना के पीछे कवि में नवीनता के प्रति उत्साह के साथ बौद्धिक चेतना कार्यरत कही जा सकती है. पौराणिक खण्डकाव्यों का वर्णन क्रमशः किया जा रहा है ।

महाभारत से ग्रहीत कथानक पर आधारित खण्डकाव्य

" कुरुक्षेत्र " युद्ध और शान्ति की समस्या पर लिखा गया मानसिक अन्तर्द्वन्द्व को प्रकट करने वाला काव्य है, जिसमें युधिष्ठिर और भीष्म के संवादों के माध्यम से युद्ध की अनिवार्यता का प्रतिपादन किया गया है. इसमें वीरोल्लास भरी उक्तियाँ अवश्य आयी हैं और "पौरुष की जागृति " को " धर्मयुद्ध " की संज्ञा अवश्य दी गयी है किन्तु यह वीर काव्य के स्थान पर चिन्तन प्रधान काव्य ही कहा जा सकता है. अतः प्रस्तुत विवेचन में इसे नहीं लिया जा रहा है ।

पूर्ववर्ती विवेचन में यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि महाभारत से ग्रहीत कथानक पर आधारित पाँच खण्डकाव्य हैं, जिनमें " रश्मिरथी ", " कर्ण " एवं " सेनापति कर्ण " की कथावस्तु एक ही है, इसलिए इन तीनों का विवेचन पहले किया जा रहा है. रामधारी सिंह " दिनकर " कृत " रश्मिरथी " केदार नाथ मिश्र " प्रभात " कृत " कर्ण ", एवं लक्ष्मीनारायण मिश्र कृत " सेनापति कर्ण " में महाभारत के प्रसिद्ध महारथी कर्ण को नायक का स्थान दिया गया है. संस्कृत कवियों के हाथों कर्ण को न्याय नहीं मिला, दिनकर जीने सर्वप्रथम उसीका परिमार्जन करने के लिए तथा पौराणिक कथानक को युगीन चेतना के अनुरूप " रश्मिरथी " खण्डकाव्य की रचना की, उसके उपरान्त " प्रभात " एवं लक्ष्मीनारायण मिश्र जी ने " कर्ण " एवं " सेनापति कर्ण " लिखकर उक्त चेतना को पुनर्भावित किया. " रश्मिरथी " एवं " कर्ण " कृतियाँ सात- सात सर्गों में विभक्त हैं. सेनापति कर्ण पाँच सर्गों में. तीनों कृतियाँ ही स्वतंत्रता के उपरान्त की है. ये रचनाएँ दलितों एवं उपेक्षितों को यथोचित सम्मान का समर्थन करती तथा कुल और जाति के अहंकार को मिटाकर मानवीय मूल्यों और गुणों की स्थापना पर बल देती है.

" रश्मिरथी " में बालक कर्ण के जन्म, उसका मंजूषा में बन्द कर नदी में बहाया जाना, सारथी अधिरथ द्वारा उसका पालन पोषण तथा धनुर्धर के रूप में उसकी प्रसिद्धि का वर्णन है. आगे चलकर यही बालक कर्ण अपने आपको ब्राह्मण कुमार बताकर महर्षि से शास्त्रास्त्र की शिक्षा ग्रहण करता है, किन्तु दुर्भाग्यवश विषकीट के कारण उसका यह भेद खुल जाता है और उसे महर्षि से यह शाप मिलता है कि अंतिम समय में ब्रह्मास्त्र की शिक्षा से उसे विस्मृत होना पड़ेगा. कथा को आगे बढ़ाते हुए इसमें कवि ने पाण्डवों का तेरह वर्ष बनवास काटकर लौटना, श्रीकृष्ण का दूत बनकर कौरवों के पास संधि प्रस्ताव लेकर जाना एवं अन्त में निराश होना आदि घटनाओं का वर्णन है.

अर्जुन की रक्षा के लिए इन्द्र का ब्राह्मण वेश में कर्ण के जन्मजात कवच कुण्डल लेने आना, उसकी दानशीलता एवं व्यक्तित्व से प्रभावित होकर एक ध्वनि शक्ति का देना, अपने पुत्र से मिलने एवं पाँच पांडवों की प्राण रक्षा के लिए माता कुन्ती का चुपचाप उसके पास आना और कर्ण को उसके जन्म की कहानी बताकर अपने अनुजों से मिलने का अनुरोध करना, कर्ण का अर्जुन को छोड़ कर शेष चार पांडवों को न मारने की प्रतिज्ञा करना एवं अंत तक इस वचन का पालन करना, भीष्म पितामह के युद्ध में आहत होने के बाद युद्ध का कार्य भार सँभालना, शत्रुदल में अपने पौरुष से आतंक फैलाना, अर्जुन- कर्ण युद्ध के समय कर्ण के रथ का पहिया पृथ्वी में धंसना एवं गड़े हुए पहिए को निकालते समय कृष्ण की प्रेरणा से अर्जुन का अधर्मपूर्वक कर्ण का वध करना इत्यादि महत्वपूर्ण घटनाओं को रश्मिरथी में संजोया गया है. इस प्रकार प्रायः सम्पूर्ण कथासूत्र " महाभारत " पर आधारित है ।

केदारनाथ मिश्र " प्रभात " कृत " कर्ण " में " रश्मिरथी "

वाली लगभग सभी घटनायें नहीं है परन्तु द्वितीय सर्ग " द्यूत सभा में द्रौपदी " को वारांगना कहना एवं सप्तम सर्ग " जलांजलि " में युधिष्ठिर युद्ध के उपरान्त जब सगे संबंधियों का अन्तकर्म कर रहे थे और उनका नाम लेकर जलदान दे रहे थे तब कुन्ती ने कर्ण के स्मृति तर्पण के लिए उन्हें प्रेरित किया. युधिष्ठिर के पूछने पर माता कुन्ती को यह बताना पड़ता है कि कर्ण उनके अग्रज थे जिसको सुनकर युधिष्ठिर को पश्चाताप होता है, कि घटनाएँ ही रश्मिरथी की कथानक से भिन्न हैं।

लक्ष्मीनारायण मिश्र कृत " सेनापति कर्ण " में कथा का प्रारंभ युद्ध क्षेत्र में द्रोणाचार्य की मृत्यु के पश्चात युद्ध शिवर में कौरवों की मंत्रणा से होता है तथा अर्जुन एवं कर्ण के रणभूमि में आने से पूर्व ही भीम पुत्र घटोत्कच की रण सज्जा में इस काव्य के अंतिम सर्ग की समाप्ति हो जाती है. इतने से कथानक को लेकर कवि ने मंत्रणा, चिन्ता, सृष्टि धर्म, विषाद तथा अर्ध्यदान इन पाँच सर्गों की सृष्टि की है. इस काव्य में द्रौपदी घटोत्कच का संवाद, पितृ ऋण मुक्त होने के लिए भीम के पास आना, भीष्म पितामह के समक्ष ममतालु माँ के रूप में कुन्ती द्वारा कर्ण की जन्म कथा एवं दुर्बलता जैसे प्रसंग नवीन कहे जा सकते हैं.

समीक्षा

उपर्युक्त खण्डकाव्यों में से " रश्मिरथी " तथा " कर्ण "का कथानक " सेनापति कर्ण " की तुलना में अधिक विस्तृत है और सामाजिक साम्य की चेतना भी मुखर है, जबकि " सेनापति कर्ण " केवल उसके उदात्त और पराक्रमी व्यक्तित्व को ही उजागर करता है. यद्यपि यह कृति अधूरी है, तथापि इसमें कवि की प्रतिभा का उत्कर्ष तो दीख ही जाता है। कथावस्तु की बाहरी रूपरेखा महाभारत

की है जिसमें कवि ने अपनी कल्पना के द्वारा परिवर्तन किया है.

" रश्मिरथी " की भूमिका में कवि ने लिखा है कि --

" विशेषतः मुझे इस बात का संतोष है कि अपने अध्ययन और मनन से मैं कर्ण के चरित्र को जैसा समझ सका हूँ, वह काव्य में ठीक से उतर आया है और उसके वर्णन के बहाने मैं अपने समय और समाज के विषय में जो कुछ कहना चाहता था, उसके अवसर भी मुझे यथास्थान मिल गये हैं. .... यह युग दलितों और उपेक्षितों के उद्धार का युग है. अतएव, यह बहुत स्वाभाविक है कि राष्ट्र भारती के जागरूक कवियों का ध्यान उस चरित्र की ओर जाये जो हजारों वर्षों से हमारे सामने उपेक्षित एवं कलंकित मानवता का मूक प्रतीक बनकर खड़ा है । [43]

आधुनिक युग की सामाजिक चेतना के परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो यह युग मानवतावाद और सामाजिक समानता की भावना से अनुप्राणित है. गांधीजी ने अपने राष्ट्रीय आन्दोलनों में हरिजनों और दलितों के उद्धार और उन्हें सम्मान पूर्ण स्थान दिलाने का कार्यक्रम प्रस्तुत किया था. कवि दिनकर का निम्नलिखित कथन इसी सामाजिक नव जागरण को प्रकाशित करता है.

कर्ण का भाग्य सचमुच, बहुत दिनों बाद जागा है. यह उसीका परिणाम है कि उसके पार जाने के लिए आज जलयान पर जलयान तैयार हो रहे हैं. जहाजों के इस बड़े बेड़े में मेरी ओर से एक छोटी सी डोंगी ही सही । " [43 (A)]

मार्मिक प्रसंगों की सफलतापूर्वक अवधारणा में " रश्मिरथी " में परशुराम के शाप पर कर्ण का विलाप, कर्ण- कुन्ती प्रसंग, अर्जुन का प्रतिज्ञा पालन और सूर्यास्त पर मानसिक वेदना, कर्ण खण्डकाव्य में द्यूत सभा में द्रौपदी का विलाप, कर्ण वध, कुन्ती और कृष्ण आदि मार्मिक प्रसंग हैं , उसी प्रकार " सेनापति कर्ण " में हिडिम्बा का विलाप, द्रौपदी घटोत्कच

संवाद आदि प्रसंग हैं. तीनों में ही शूरवीर कर्ण की आधिकारिक कथा है जिसमें " कर्ण " एवं सेनापति कर्ण " में कवि ने जलदान देकर अन्तकर्म का प्रसंग कल्पना प्रसूत कहा जा सकता है एवं कर्ण का प्रण, द्रौपदी पर लांछण भी कल्पा प्रसूत ही हैं. " सेनापति कर्ण " में भीष्म पितामह के समक्ष ममतालु माँ के रूप में कुन्ती द्वारा कर्ण की जन्म कथा एवं दुर्बलता का वर्णन, भीम पुत्र घटोत्कच एवं पत्नी हिडिम्बा की कथा मौलिक कल्पना शक्ति की परिचायक प्रतीत होती है.

तीनों खण्डकाव्यों की मौलिक विशेषता मैत्री के आदर्श की सफल प्रतिष्ठा है जिसे कर्ण के चरित्र के माध्यम से सशक्त रूप में प्रस्तुत किया गया है. राजनीति की सैद्धान्तिक चर्चा की भी " रश्मिरथी " एवं " सेनापति कर्ण " में प्रचुरता है. प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन भी कवि ने बड़ी कुशलता से किया है. युद्ध की घटनाओं की प्रचूरता एवं सजीवता भी इस खण्डकाव्य की अतिरिक्त विशेषता है. यद्यपि कवि ने " सेनापति कर्ण " को एक अनुपम महाकाव्य कहा है तथापि यह महाकाव्य की कोटि में नहीं आता. इसमें कर्ण के जीवन की सम्पूर्ण घटनाओं को नहीं लिया गया. प्रकाशकीय वक्तव्य से ज्ञात होता है कि इसमें अंतिम सर्ग लिखे ही नहीं गये. [44] जिस रूप में यह कृति प्रकाशित है, उसमें खण्डकाव्य के दृष्टिकोण से अधूरापन नहीं लगता ।

इस प्रकार इन कृतियों के सम्यक् अनुशीलन द्वारा हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इसमें कवियों की अपनी मौलिक काव्य चेतना है जो उनकी अध्ययनशीलता, प्रतिभा और कल्पना शक्ति को ही प्रमाणित करती हैं ।

चरित्र चित्रण

" रश्मिरथी " , " कर्ण ", " सेनापति कर्ण " तीनों ही

चरित्र प्रधान काव्य हैं, जिसकी रचना का मुख्य उद्देश्य महाभारत के महान तेजस्वी पात्र कर्ण के चरित्र का नव मूल्यांकन है. " रश्मिरथी " में इस काव्य के लिए कवि ने युधिष्ठिर एवं द्रौपदी के चरित्र पर आक्रमण नहीं किया है परन्तु रूढ़िवादी अभिजात वर्ग की तिरस्कार भावना के आधार पर उन्मूलन अवश्य किया है. कर्ण के चरित्र को कवि ने नवीन मानवतावादी दृष्टि से निरूपित किया है. केवल " कर्ण " खण्डकाव्य में कवि ने द्रौपदी के चरित्र पर इस कार्य के लिए आक्रमण किया है परन्तु " सेनापति कर्ण " में तो कर्ण के सम्यक् जीवन का वर्णन न होकर कर्ण की शूरता, उदारता और आदर्श मैत्री आदि विशेषताओं के मौलिक चित्र ही प्रस्तुत हुए हैं. इन तीनों में कृष्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन, कुन्ती, द्रौपदी एवं " सेनापति कर्ण " में हिडिम्बा और पुत्र घटोत्कच के चरित्र भी आते हैं परन्तु कवि का मुख्य उद्देश्य कर्ण को ही उभारने का है.

प्रस्तुत काव्यों में नायक कर्ण के चरित्र में गुरुभक्ति, आदर्श मैत्री, वीरता, महान त्याग और दानशीलता आदि उदात्त गुणों की सुंदर व्यंजना हुई है. महाभारत के पात्रों में कर्ण पहला पात्र है जो अपने पुरुषार्थ और पराक्रम के बल पर यशस्वी बनता है. वह जाति भेद का विरोधी है और उसे केवल पाखंडियों की पूंजीमात्र समझता है. वह अपने मित्र दुर्योधन के प्रति कृतज्ञ है जिसका निर्वाह जीवन की बाजी लगाकर वह करता रहा है. वह अपने वचन का पक्का है. कृष्ण और कुन्ती द्वारा जन्मकथा बताकर पाण्डवों से मिलने के परामर्श तक को ठुकरा देता है और स्पष्ट कहता है कि उसका रोम-रोम दुर्योधन का ऋणि है. वह ब्राह्मण वेश में आये इन्द्र को अपने जन्मजात कवच और कुण्डल एवं माता कुन्ती को अर्जुन को छोड़कर शेष चार पुत्रों का जीवन दान देता है ।

कर्ण की युद्धवीरता तथा दानवीरता के समान उसकी मित्रता भी अविस्मरणीय है. मित्र धर्म की रक्षा के लिए वह सदैव तत्पर रहता है.

दिग्विजय करने के उपरान्त समस्त विजित प्रदेशों को वह दुर्योधन को दे देता है. दुर्योधन द्वारा कलिंग की राजकुमारी के अपहरण के अवसर पर भी मित्र की मदद कर उसका मार्ग निष्कंटक करता है. कर्ण में जहाँ वीरत्व और पुरुषार्थ है, वहीं वह भाग्यवादी भी है. इन्द्र को कवच और कुण्डल देने के उपरान्त वह अपने भाग्य को कोसता है, घटोत्कच के बध के समय भी वह अपने भाग्य को ही धिक्कारता है. कर्ण के चरित्र में भाग्यवाद की प्रवंचना एक असंगति सी लगती है. पर भाग्य पर लांछनापूर्णशब्द उसके मुख से विशेष परिस्थितियों में ही निकले हैं. इसी कारण इसका चरित्र सहज मानवीय है.

कर्ण के चरित्र में मातृभक्ति की भावना भी है, जिस माता की गोद में वह पला बड़ा हुआ उस माता का अधिकार वह जन्मदात्री माता कुन्ती तक को नहीं देना चाहता और अन्त तक राधेय ही कहलाता है. इसके अतिरिक्त साहस एवं धैर्य भी उसके चरित्र का अन्य गुण है जिसका पता कवच और कुण्डल के दान के समय लगता है । 45

इन सब गुणों के साथ पश्चाताप करने का भी महान गुण है. द्यूत सभा में द्रौपदी को वारंगना कहना सारी उम्र वह नहीं भूल पाया और यह दुःख उसको हमेशा कष्ट देता रहा और वे कृष्ण को भी कहते हैं--

" दुःख एक ही बहुत दिनों से हृदय पालता मेरा,
एक ग्लानि का शूल निमिष पल हृदय सालता मेरा
लांछित पीड़ित हुई हाय, मेरे द्वारा पांचाली
अपमानित की है मैंने उसके सुहाग की लाली
धिक कृतज्ञता को जिसने ऐसा दुष्कर्म कराया,
प्रायश्चित करूँगा केशव छोड़ नीच यह काया । " 46

इस प्रकार इन कवियों ने कर्ण के चरित्र की महानता को उद्घाटित करने में सफलता प्राप्त की है. जहाँ कहीं भी कर्ण का चरित्र दुर्बल हुआ है वहीं उसे कवियों ने गिरने से बचा लिया है. इस प्रकार कर्ण को महामना, महामहिम, दानवीर, दृढ़प्रतिज्ञ, दृढ़चरित्रवाले, समरवीर, अद्वितीय तेजयुक्त एवं कीर्तिवान थे. इस प्रकार कर्ण का चरित्र महान मानवीय गुणों का संघात दिखाई देता है.

रस
==

इनमें " रश्मिरथी " " कर्ण " , " सेनापति कर्ण " में कर्ण के चरित्र के अनुरूप वीर रस की प्रधानता है. " रश्मिरथी " खण्ड-काव्य का अन्त कर्ण की मृत्यु से एवं " कर्ण " का युधिष्ठिर द्वारा जलदान से होता है जिसमें करुण रस का रसास्वादन होता है. परन्तु मूलतः देखा जाये तो इसमें वीर रस प्रधान ही है ।

वात्सल्य, करुण, रौद्र एवं वीभत्स के भी उदाहरण तीनों में यथा प्रसंग मिलते है. केवल " सेनापति कर्ण " ही ऐसा है जिसमें श्रृंगार रस दुर्योधन और उसकी प्रेयसी के रूप में दृष्टिगोचर होता है, जो वीर रस के सहायक के रूप में है. प्रथम अध्याय में वीर रस के जो भेद दिये गये हैं वे सभी कर्ण में मिलते हैं. " रश्मिरथी " के सप्तम सर्ग में कर्ण का धर्मवीर रूप [47] दानवीर रूप इन्द्र को कवच कुण्डल, माता कुन्ती को चारों पुत्रों का प्राणदान [48] आदि प्रसंगों में दृष्टिगोचर होता है. इसके साथ ही कर्म की ओर अग्रसर होने में कर्ण का कर्मवीर रूप भी प्रकट होता है. वीर रस का अन्य गुण ओज भरी वाणी तो यत्र तत्र दिखाई देती है. [49] कर्ण का युद्ध वीर रूप तो भरा पड़ा है इसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

" काटता हुआ रण विपिन क्षुब्ध

शत्रेय गरजता था क्षण-क्षण,
सुन-सुन निनाद की धमक शत्रुका
व्यूह लरजता था क्षण-क्षण ।
अरि की सेना को विकल देख
बढ़ चला और कुछ समुत्साह,
कुछ और समुद्वेलित होकर
उमड़ा भुज का सागर अथाह । " 50

इसमें पाण्डव सेना आलम्बन, कर्ण आश्रय, शत्रु के धमक की निनाद, क्षण-क्षण शत्रु के व्यूह का लरजना, अरि सेना की व्याकुलता उद्दीपन, कर्ण की क्षुब्धता, उसका रण- विपन काटना, क्षण-क्षण गर्जना, उसका उत्साहित होकर आगे बढ़ना, भुज सागर का उमड़ना आदि अनुभाव, हर्ष, उल्लास, गर्व, औत्सुक्य, संचारी से पुष्ट उत्साह स्थायी भाव से वीर रस का पूर्ण परिपाक है. निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि ये वीर रस के उत्कृष्ट उदाहरण हैं.

प्रण- भंग और युद्ध

राष्ट्रकवि दिनकर द्वारा विरचित " प्रण-भंग " खण्डकाव्य में महाभारत के युद्ध की घटनायें हैं जिसे कवि में पूर्वाभास, रण निमंत्रण, युधिष्ठिर, कुरुक्षेत्र, प्रणभंग एवं उपसंहकार इन छः स्थूल भागों में विभक्त किया है. युद्ध का पूर्वाभास देकर अर्जुन दुर्योधन को कृष्ण के पास सहायता के लिए जाना, कृष्ण का नारायणी सेना एवं अपने को शस्त्रहीन सारथी के रूप में अर्पित करना, अर्जुन का कृष्ण को लेना, युधिष्ठिर का कौरवों के प्रति अनुराग, अर्जुन एवं भीम की ओजभरी वाणी, कुरुक्षेत्र का युद्ध, दुर्योधन का घबराकर कर्ण के पास जाना तदुपरान्त भीष्म पितामह के पास पहुँचकर अपशब्द कहना भीष्म की प्रतिज्ञा, भीष्म का कठिन युद्ध जिसे देखकर कृष्ण को भी प्रतिज्ञा भंग कर भक्त अर्जुन के लिए शस्त्र उठाना

आदि घटनाएँ हैं. इसी प्रकार मैथिलीशरण गुप्त द्वारा विरचित " युद्ध " खण्डकाव्य भी " प्रण भंग " वाली ही शस्त्र धारण न करने की घटना को लेकर है .

समीक्षा
====

उपर्युक्त कथा-सूत्र के संदर्भ में " प्रण भंग " का शीर्षक अंतिम घटना पर आधारित है. एक ही आधिकारिक कथा चलती है और कृष्ण की प्रतिज्ञा भंग की अंतिम और मुख्य घटना की पृष्ठभूमि के रूप में महाभारत के युद्ध की पूर्ववर्ती भूमिका से खण्डकाव्य को आरंभ किया गया है. घटनाओं के माध्यम से भीष्म के असामान्य शौर्य का उद्घाटन इसका उद्देश्य प्रतीत होता है. इसमें कृष्ण अर्जुन संवाद, युधिष्ठिर अर्जुन और भीम के संवाद, भीष्म द्वारा कृष्ण से अपने में लीन करने के लिए प्रार्थना आदि मार्मिक प्रसंग कहे जा सकते हैं. वीरता, धैर्य, साहस आदि से संबंधित उदात्त प्रसंगों की अवतारणा ने इसे एक उत्कृष्ट वीर काव्य बना दिया है. वीरकाव्यों की राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि इसमें राष्ट्रीय प्रेरणा के सन्निवेश के स्थान पर भीष्म पितामह की भक्ति और श्रीकृष्ण की भक्तवत्सलता प्रकाश में आती है ।

इसी प्रकार गुप्त जी का " युद्ध " दिनकर के " प्रण भंग " के पश्चात् की रचना है और उसी घटना को लेकर कवि ने अपनी कल्पना से सँवारने का प्रयास किया हैं. यथासंभव कवि ने इस खण्डकाव्य में मार्मिक प्रसंगों की अवधारणा भी करने का सफल प्रयास किया है. युद्ध की घटनाओं की सजीवता इसकी एक अन्य विशेषता है. प्रण भंग की तरह ही वीरता, साहस, धैर्य आदि उदात्त प्रसंगों की योजना ने इसे एक उत्कृष्ट वीर काव्य बना दिया है. नाम की सार्थकता

" युद्ध " खण्डकाव्य की अतिरिक्त विशेषता है. इन कृतियों के सम्यक् अनुशीलन द्वारा यह पता लगता है कि यह कवि की कल्पनाशीलता, अध्ययन एवं प्रतिभा का ही परिणाम है ।

चरित्र चित्रण

चरित्र चित्रण के दृष्टिकोण से इसमें " महाभारत " से भिन्न कोई नई चरित्र सृष्टि नहीं दृष्टिगोचर होती. यद्यपि इसमें अर्जुन, श्रीकृष्ण, दुर्योधन, युधिष्ठिर, भीम तथा कर्ण आदि गौण पात्र आते हैं किन्तु चरित्र के विकास के दृष्टिकोण से भीष्म का चरित्र ही उभर कर आया है. रस के दृष्टिकोण से ये दोनों ही काव्य भीष्म पर्व की घटनाओं से परिपूर्ण हैं. अतः युद्ध वर्णन तथा प्रकारान्तर से वीर रस की ही एक मात्र अभिव्यक्ति हमें दृष्टिगोचर होती है. केवल अंतिम समय में भीष्म का उत्साह और कृष्ण के प्रति उनकी प्रार्थना उनके चरित्र को धर्म की ओर मोड़ती है. अतः यह विशुद्ध रूप से पौराणिक काव्य हैं. " दिनकर " की परवर्ती रचनाओं में जो आधुनिक चेतना का सन्निवेश दिखाई पड़ता है उसका " प्रण भंग " में अभाव है. इसी प्रकार गुप्त जी की इस कृति में परवर्ती और पूर्ववर्ती रचनाओं की चेतना का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है. उपर्युक्त तथ्यों के प्रकाश में हम कह सकते हैं कि ये सामान्य कोटि की रचनाएँ हैं.

मूल्यांकन

इन पाँचों खण्डकाव्यों के अनुशीलन के आधार पर कहा जा सकता है कि इन पाँचों का सम्बन्ध राष्ट्रीय काव्यधारा से प्रत्यक्ष रूप से नहीं स्थापित होता. स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संचालित राष्ट्रीय आन्दोलनों में संघर्ष और इन काव्यों के संघर्ष में अन्तर है. किन्तु

आधुनिक बौद्धिक चेतना, सामाजिक दृष्टि एवं व्यक्ति को जाति धर्म आदि के भेद भाव का विचार किये बिना उत्थान का अवसर देने की व्यक्ति स्वातंत्र्य की चेतना " रश्मिरथी ", " कर्ण ", एवं " सेनापति कर्ण " में अवश्य मुखरित हुई है. आधुनिक चेतना से विहीन " प्रण भंग " एवं " युद्ध " खण्डकाव्य हैं. सम्पूर्णतः देखा जाय तो ये खण्डकाव्य वीर रस की उत्कृष्ट काव्य कृतियाँ हैं ।

§2§ रामायण से ग्रहीत कथानक पर आधारित खण्डकाव्य

रामायण से ग्रहीत कथानक पर आधारित श्यामनारायण पाण्डेय के दो खण्डकाव्य " तुमुल " एवं " जय हनुमान"आते हैं. रचनाकाल के दृष्टिकोण दोनों ही खण्डकाव्य स्वतंत्रता के उपरान्त के हैं जिनमें " तुमुल " सन् 1948 ई० एवं " जय हनुमान " सन् 1956 की रचना है.

कथावस्तु

" तुमुल " खण्डकाव्य में लक्ष्मण एवं मेघनाद के जन्म, मकराक्ष की मृत्यु, रावण का शोकाकुल एवं मेघनाद की वीरता को लखकर मकराक्ष की मृत्यु को भूलना, पितृभक्त मेघनाद की पिता रावण के सम्मुख राम- लक्ष्मण को हराने की प्रतिज्ञा, युद्ध की तैयारी, देवताओं का भयभीत होना, लक्ष्मण के अहं को चोट, रामकी आज्ञा एवं आशीर्वाद से युद्ध की तैयारी,लक्ष्मण मेघनाद का वार्तालाप, दोनों में घमासान युद्ध, मेघनाद द्वारा शक्ति का प्रयोग, लक्ष्मण का मूर्छित होना, वैद्य सुषेन का आना, हनुमान की संजीवनी बूटी लाना एवं लक्ष्मण का स्वास्थ्य लाभ, विभीषण एवं राम का वार्तालाप, विभीषण द्वारा मेघनाद के शौर्य की प्रशंसा एवं यज्ञ करते मेघनाद को मारने का परामर्श, राम की वीरता आज्ञा से यज्ञ करते मेघनाद का लक्ष्मण द्वारा बध आदि घटनायें संजोयी गयी हैं ।

" जयहनुमान " में रामभक्त वीर हनुमान की कथा है जो राम प्रिया सीता का पता लगाने लंका जाते हैं. सुरसा और सिंहका राक्षसियों के अवरोध पर विजय प्राप्त कर लंकापुरी की आज्ञा पाकर लंका में प्रवृष्ट होना, अशोक वाटिका में सीता को देखना, सीता-रावण संवाद, राक्षसी सुंदरी के कहने पर रावण का सीता को दो माह की अवधि प्रदान करना, त्रिजटा राक्षसी का भयंकर स्वप्न, इसके उपरान्त हनुमान का सीता के सम्मुख उपस्थित होना, राम का समाचार देना, सीता से अनुमति प्राप्त कर अशोक वाटिका को उजाड़ना, रावण का मेघनाद को बंदी बनाकर लाने के लिए भेजना, हनुमान-रावण का वार्तालाप, हनुमान द्वारा लंका- दहन एवं लौटकर राम को सीता का समाचार देना आदि घटनायें ली गयी हैं.

समीक्षा

" तुमुल " की उपर निर्दिष्ट कथावस्तु इस बात का द्योतक है कि कविवर श्यामनारायण पाण्डेय ने मेघनाद के चरित्र को भिन्न परिवेश में देखने का प्रयास किया है. इस प्रयास में माइकेल मधुसूदन दत्त के मेघनाद बध काव्य को पूर्ववर्ती भूमिका के रूप में स्वीकार किया जा सकता है. क्योंकि सबसे पहले उन्होंने मेघनाद के चरित्र को ऊपर उठाने का प्रयास किया था. उपर्युक्त कथावस्तु से स्पष्ट है कि इसमें विषय की नवीनता नहीं है परन्तु मेघनाद बध के प्रसंग में कवि ने कथा को सायास बदलने का प्रयास किया है. ऐसा प्रतीत होता है कि ये केवल मेघनाद के चरित्र को ऊपर उठाने के प्रयत्न में ही किया गया है, जबकि तुलसीदास की "रामायण " के " लंका काण्ड " [51] में लक्ष्मण और हनुमान ने यज्ञ का ध्वंस किया था और मेघनाद क्रुद्ध होकर युद्ध भूमि में आ गया, तब लक्ष्मण ने मेघनाद का बध किया था. जबकि प्रर्थाना में ही कवि ने यह शंका उठाई है कि यज्ञ करते हुए वीर

योद्धा मेघनाद के वध की नीति ठीक नहीं है. ईश्वर समझकर एवं माया जानकर तो सबकुछ छिप सकता है किन्तु वास्तविकता तो यह है कि निकुम्भिला पर यज्ञ करते हुए निरस्त्र मेघनाद पर शस्त्र चलाया गया. होतृ- समाज के सहित उसका वध किया गया, यज्ञ विध्वंस किया गया.[52] कवि की यहाँ शंका निर्मूल ही है जो रामायण से बिल्कुल ही मेल नहीं खाती. पाण्डेय जी की यह प्रथम कृति है और इस पर पूर्णतः रामायण का प्रभाव कवि ने स्वयं स्वीकार किया है. उनके ही शब्दों में ...

" रामलीला के अवसर पर जीवन के प्रभात से ही लक्ष्मण और मेघनाद के युद्ध देखने में अधिक रस लेता था. उन दोनों के भयंकर तुमुल संग्राम मुझे अपनी ओर खींच लेते थे. इसलिए साहित्य में प्रवेश करते ही मैंने सर्वप्रथम " त्रेता के दो वीर " नामक खण्डकाव्य लिखा, जिसमें मैंने उन्हीं दोनों वीरों के युद्ध का वर्णन किया है. उसी पुस्तक का संवर्धित एवं संशोधित संस्करण " तुमुल " नाम से है. पुस्तक का नाम इसलिए बदल दिया कि पहला नाम मुझे अधिक अक्षरों वाला लम्बा तथा असाहित्यिक मालूम हुआ । "[53]

इसमें एकमात्र लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध की ही घटना है. प्रासंगिक नाम की कोई कथा इसमें दृष्टिगोचर नहीं होती. उपरनिर्दिष्ट वर्णन के अनुसार कवि ने रामायण की इतिहास प्रसिद्ध घटना के साथ कल्पना से भी काम लिया है. रावण मेघनाद, मेघनाद लक्ष्मण संवाद एवं मेघनाद की मृत्यु में कवि ने कल्पना का प्रयोग अधिक किया है, लक्ष्मण को शक्ति लगने पर रामचन्द्र का विलाप, मेघनाद बध आदि मार्मिक प्रसंग कहे जा सकते हैं और यह इसके कथानक की अन्य विशेषता है. इसमें वीरता, साहस, धैर्य आदि के उदात्त प्रसंगों की योजना भी अत्यधिक हुई है. कथानक में गति है और वह उद्याम वेग से चरम घटना की ओर उन्मुख होता है. कृति के सम्यक अनुशीलन द्वारा हम यह कह सकते हैं

कि कवि ने जहाँ अपनी कल्पनाशक्ति एवं शिल्प योजना का परिचय दिया है वहाँ दूसरी ओर रामचन्द्र के प्रति अपनी अंध भक्ति भी दर्शायी है, कवि यदि " प्रार्थना " में खण्डकाव्य के प्रति उठी शंका को व्यक्त कर सकता है तो उसे काव्य के अंत में इस कार्य के लिए देवताओं द्वारा लक्ष्मण पर पुष्प वर्षा एवं राम को देवता मानकर जयजयकार नहीं कराना चाहिए था, अतः यह विशुद्ध रूप से पौराणिक काव्य है और धर्म प्रेरित होकर लिखा गया है,

" जयहनुमान " की कथावस्तु के विवरण से स्पष्ट है कि इसकी कथावस्तु हनुमान के चरित्र को केन्द्र में रखकर रामकथा के सुन्दरकाण्ड की घटनाओं का संयोजन है, यह सम्पूर्ण संयोजन कवि द्वारा उदात्त शैली में प्रस्तुत हुआ है और देखते हुए कवि की पुराण प्रियता का साक्ष्य मिलता है, परम्परागत राम कथा से इसका एकमात्र अन्तर यही है कि इसमें हनुमान का चरित्र " रामचरितमानस " के भक्त हनुमान का न होकर एक कर्तव्य परायण पराक्रमी एवं कर्मवीर व्यक्तित्व के रूप में हनुमान के चरित्र को उभारा गया है, मंगलाचरण से भी कवि की भक्ति चेतना ही प्रकाश में आती है, लंकापुरी के मानवीकरण में आधुनिककाल की शिल्प योजना अवश्य है किन्तु कथावस्तु में कोई मौलिकता नहीं दृष्टिगोचर होती, सम्पूर्ण काव्य में वीरता, साहस, धैर्य, शौर्य आदि के उदात्त प्रसंगों की योजाना है जो इसे वीर काव्य का रूप प्रदान करती है ।

चरित्र चित्रण

" तुमुल " एवं " जयहनुमान " इन दोनों ही खण्डकाव्यों में प्रमुखतः लक्ष्मण, मेघनाद एवं हनुमान ही प्रमुख हैं, अन्य राम, विभीषण, रावण, सीता आदि पात्र गौण हैं ये कथा को ही विस्तार देते हैं, रामानुज लक्ष्मण रामकथा के प्रमुख पात्रों में से हैं, राम के प्रति उनका

भक्तिमय प्रेम, त्याग और समर्पण उन्हें राम के समान ही अमर बना देता है. लक्ष्मण की वाणी में अमृत, हृदय में दया एवं सूर्य जैसा तेज है. कुलधर्म की रक्षा का उन्हें ध्यान है एवं वही कार्य करते हैं जिससे पृथ्वी का कल्याण हो। [54] अपने अग्रज की तरह हर विधा हर कला में पूर्ण हैं.

अग्रज राम के प्रति लक्ष्मण का प्रेम और भक्ति भाव श्लाघनीय है. राम की सेवा करने में ही वे अपने जीवन को सार्थक समझते हैं. यही कारण है कि पिता के प्रण की रक्षा के लिए जब राम वन को प्रस्थान करते हैं तो लक्ष्मण भी उनकी सेवा करने के लिए उनके साथ वन जाने की इच्छा व्यक्त करते हैं. मेघनाद द्वारा शक्ति लगने पर लक्ष्मण के निर्जीव हो जाने पर मारुति द्वारा कहे गये शब्द उनकी भातृभक्ति के ज्वलन्त प्रमाण हैं. [55]

लक्ष्मण अत्याधिक संयमी, पराक्रमी एवं तेजस्वी हैं. लक्ष्मण की प्रकृति राम के प्रतिकूल है इनमें धैर्य और शान्ति की कमी है . क्रोध में देखकर काल भी थरथराता है. लक्ष्मण दृढ़ प्रतिज्ञ भी हैं. मेघनाद को मारने से पूर्व अग्रज के सम्मुख वे प्रतिज्ञा करते हैं कि या तो मैं मेघनाद का बध करूँगा नहीं तो कोदण्ड ही धारण नहीं करूँगा. अपनी इस प्रतिज्ञा को वे अंत तक पालन करते हैं. लक्ष्मण को अपनी शक्ति का अभिमान है. मेघनाद से युद्ध करते समय उनका निम्न लिखित कथन प्रत्यक्ष प्रमाण है--

" मुझ सिंह से तुझ हरिण को, कोई बचा सकता नहीं ।
रण-मेदिनी को छोड़ तू भग जा नहीं सकता कहीं ।।
सब लोग देखेंगे तुझे, रक्तारक्त थोड़ी देर में ।
पड़ जायगा रण देख तू क्या, जनक तेरा फेर में ।। " [56]

लक्ष्मण युद्ध कला में निपुण हैं तथा उनमें अतुल पराक्रम है. इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मेघनाद से युद्ध करते समय मिलता है । [57] इस प्रकार लक्ष्मण भातृभक्त, हर कला में निपुण, क्रोधी, दृढ़ प्रतिज्ञ एवं वीर के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं ।

मेघनाद रावण का पुत्र, प्रशस्त संयमी, धीर, विक्रमी, प्रतापी, ज्ञानवान, शीलवान, विवेकी, गुणी एवं सूर्य की तरह तेजस्वी और काल का ही रूपान्तर है. [58] लंकेश पुत्र मेघनाद में अपराजेय वीरता, दुर्दयनीय साहस, अदम्य उत्साह है. युद्ध में उसकी ललकार सुनकर बड़े से बड़े वीर के भी पैर उखड़ जाते हैं. वह अप्रतिम शक्तिमान है एवं उसकी शक्तियाँ अप्रमेय हैं. अशोक वाटिका में उछलते कूदते बजरंगबली को वही बाँधता है और लक्ष्मण को भी शक्ति लगाकर मूर्छित कर देता है. वह अपने पिता का भक्त है. पिता को दुःखी देखकर पिता को भी धीरज बंधाता है. पिता के सम्मुख लक्ष्मण को मारने की दृढ़ प्रतिज्ञा करता है. अतः स्पष्ट है कि मेघनाद के चरित्र के परम्परागत रूप के परिमार्जन का प्रयास इस खण्डकाव्य में हुआ है.

मेघनाद केवल वीर ही नहीं वह शारीरिक सौन्दर्य से भी संपन्न है. उसके सौन्दर्य की प्रशंसा राम अनुज भी करते हैं. [59] उसकी वाणी में लोगों को प्रभावित करने की शक्ति है. लक्ष्मण के पराक्रम से भयभीत होकर अपनी भागती हुई सेना को वह अपनी वाणी के प्रभाव से ही रोकने में समर्थ होता है । [60] मेघनाद में अपनी शक्ति का इतना अभिमान है कि वह अपनी शक्ति के सामने दूसरों को तुच्छ समझता है वह पिता से कहता है --

" मेरे अभिमान पर, धिक है सहस्त्र बार,
रीछ बानरों से आज, भूमि जो पटे नहीं ।।

चाहूँ तो फरेरा फहरा, करे रवमण्डल में,
चाहूँ तो कुलावा मही व्योम का मिला दूँ मैं ।।
एक ही निमेष में, मुर्गों को बरबाद करूँ,
चाहूँ तो मंयक- सूर , को भी तोड़ ला दूँ मैं ।। " 61

विभीषण ने उसके तपस्वी होने का भी संकेत किया है --

" तप से कमाया तेज, तप से, ही कमाई शक्ति है ।
तप से तपी सी भूति पाई, इष्ट-पद अनुरक्ति है ।। "62

यदि यह कहा जाय कि मेघनाद में तपसा अर्जित बल है, तपः पूत कौशल है और तपस्या से ही प्राप्त की हुई माया है तो अतिश्योक्ति न होगी. वह वीरता में अद्वितीय, कुशल राजनीतिज्ञ है. उसे युद्ध में हराने की शक्ति किसी में नहीं है. इसीलिए लक्ष्मण उसका वध छल से यज्ञ करते समय करता है क्योंकि उससे प्रत्यक्ष युद्ध करते हुए उसे पराजित करना लक्ष्मण के लिए संभव नहीं है ।

जय हनुमान रावण के प्रमुख पात्र, पवन के पुत्र एवं राम के परम भक्त हैं. राम का कार्य करते समय उनके मार्ग में यदि कोई बाधा भी उपस्थित होती है तो उसे भी वे नहीं सह सकते. वे उस बाधा को पूर्ण रूपेण नष्ट कर देते हैं. लंका जाते समय जब सुरसा और सिंहनी उनका मार्ग रोकती है तो उसे मारकर इन्होंने अपना रास्ता कंटकहीन बना लेते हैं. वे अत्याधिक निडर और निर्भीक हैं. लंकापुरी स्वयं उनकी निडरता की प्रशंसा करती है. यही नहीं लंकेश के सम्मुख भी वह बड़ी निडरता से उपस्थित होता है और अपने आने का कारण भी निडर होकर ही कहता है । 63

हनुमान निडर ही नहीं साहसी भी है और शक्तिशाली भी ।

उनके चरित्र की यह विशेषता उस समय उभरती है जब दशानन की सेना तक कपि के गर्जन से कांपने लगती है. वह वीर योद्धा भी है. रावण की सेना उसे पकड़ नहीं सकती. अक्षयकुमार तक के यह वीर छक्के छुड़ा देता है. रामभक्त अत्यधिक ज्ञानी भी है. धर्म कर्म का उसे ज्ञान है. वह वेदों के ज्ञाता, प्रख्यात पंडित रावण को भी निडरता से धर्म का मर्म समझाता है यथा...

" धर्मी को मिलती सुख शान्ति और अधर्मी रोता सदा ।
इससे ज्ञानी त्याग अधर्म धर्म-कर्म-रत होता सदा
धर्म-मर्म के ज्ञाता आप कैसे किया पर स्त्री हरण
यह तो बुध- जन- निन्दित कर्म इसका फल है केवल मरण । " 64

हनुमान में स्वामिभक्ति कूट-कूट कर भरी है. उसकी वीरता और स्वामिभक्ति से गदगद होकर भगवान राम भी उन्हें वरदान देते हैं. इस प्रकार कवि ने पवनपुत्र हनुमान की वीरता, निडरता, यश, पराक्रम, ज्ञान और सेवक रूप का भी परिचय दिया है एवं रामायण पात्र हनुमान के चरित्र के गौरव को ऊँचा उठाया है ।

रस:-
===

यह खण्डकाव्य मूलत: वीर रस प्रधान काव्य है और करुण रस इसका सहायक होकर आया है. इसमें लक्ष्मण और मेघनाद की वीरता का अनुपम चित्रण है. मेघनाद की वीरता अत्यधिक आतंकमयी है.उसकी वीरता के कारण प्रकृति तक में हलचल मच जाती है. वीरता के अवतार केवल मेघनाद ही नहीं लक्ष्मण भी हैं. उसके युद्ध कौशल को देखकर भी पृथ्वी आकाश भी थर्राने लगते हैं. लक्ष्मण मेघनाद के युद्ध के प्रसंग में वीर रस की अजस्त्र धारा प्रवाहित हुई है. सम्पूर्ण युद्ध में वीर रस का अनन्त पारावार लहराता है. इस सम्बद्ध में एक उद्धरण द्रष्टव्य है---

" विध्वंस करके बाण को, रज में सरोष मिला दिया ।
दिखला दिया निज बाहु-बल, भीषण समर उसने किया ।।
दो नाग करते हैं समर जैसे परस्पर रोष से ।
उन्मत्त दोनों लड़ रहे वैसे, परस्पर रोष से ।।
विकसित पलास-समान वे, रक्तात्त तन देखे गये ।
लड़ते हुए दो सिंह के से, वीर वे लेखे गये ।। " 65

यहाँ मेघनाद आश्रय एवं लक्ष्मण आलम्बन हैं. लक्ष्मण का बाण छोड़ना, बल दर्शाना, भीषण युद्ध करना, रोष से पूर्णता, युद्धोन्माद, रक्तात्त तन होना, शेर के समान भिड़ना उद्दीपन, लक्ष्मण के बाणों का विध्वंस करके रजमें मिलाना, बाहुबल दिखाना, भीषण समर में प्रवृत्ति, आक्रोश, युद्ध के कारण उन्मत्तता, रुधिर से सना हुआ तन, शेर के समान भिड़ना आदि अनुभाव हर्ष, उल्लास, औत्सुक्य आवेग आदि संचारी से पुष्ट उत्साह स्थायी भाव के द्वारा वीर रस की पूर्ण निष्पत्ति हुई है. यहाँ लक्ष्मण को आश्रय और मेघनाद को आलम्बन माना जा सकता है ऐसी स्थिति में मेघनाद की चेष्टाएँ उद्दीपन एवं लक्ष्मण की चेष्टाएँ अनुभाव के अन्तर्गत आयेंगी और इस दशा में भी वीर रस की पूर्ण निष्पत्ति होगी ।

" जयहनुमान " खण्डकाव्य वीर रस प्रधान रचना है. कवि ने हनुमान, मेघनाद, अक्षयकुमार आदि के माध्यम से वीर रस को उद्घाटित किया है. हनुमान द्वारा लंका में दशानन की राक्षसी सेना का संहार करते समय उनके वीरत्व का पूर्ण उद्घाटन हुआ है. अक्षयकुमार और कपीश के द्वन्द्वयुद्ध में भी वीर रस की अजस्त्रधारा प्रवाहित होती है. यथा---

" दोनों योधा दो सिंहों की तरह गरजते जूझ पड़े
एक दूसरे पर प्रहार के दाँव-पेच सब सूझ पड़े

अक्ष मारता वाण मगर हनुमान उछल उड़ जाते थे
कपि के तीक्ष्ण प्रहार अक्ष पर भी आकर मुड़ जाते थे । " 66

यहाँ अक्षयकुमार आलम्बन एवं हनुमान आश्रय है. सिंहों की तरह गरजते हुए जूझ पड़ना, हनुमान पर प्रहार, उन पर दाँव-पेंच चलाना, हनुमान पर वाण चलाना आदि उद्दीपन एवं हनुमान का गर्जन, अक्षय पर प्रहार, दाँव पेंच चलाना, उछल पड़ना, अक्ष पर तीक्ष्ण प्रहार करना आदि अनुभाव हैं. इसी प्रकार हर्ष, औत्सुक्य, आवेग , उल्लास आदि संचारी भावों से पुष्ट उत्साह स्थायी भाव के कारण वीर रस का पूर्ण परिपाक हुआ है. यहाँ हनुमान को आलम्बन मानने पर अक्षयकुमार को आश्रय माना जा सकता है ऐसी स्थिति में हनुमान की चेष्टाएँ उद्दीपन एवं अक्षय की चेष्टाएँ अनुभाव के अन्तर्गत परिणत हो जायेंगी और इस अवस्था में भी वीर रस का पूर्ण परिपाक हुआ है ।

शक्ति की प्रतीक दुर्गा पर आधारित

शक्ति एवं रणचण्डी

मैथिलीशरण गुप्त रचित " शक्ति " एवं विश्वनाथ पाठक द्वारा रचित " रणचण्डी " खण्डकाव्य की कथावस्तु प्रायः एक ही है. " शक्ति " में चौसठ षट्पदियों के अंतर्गत एवं " रणचण्डी " में नौ सर्गों में " दुर्गा-सप्तशती " के उत्तम चरित्र का आधार ग्रहण कर दुर्गा के महात्म्य का वर्णन किया गया है. शुम्भ और निशुम्भ निशाचरों के अत्याचारों से पीड़ित होकर देव समाज जगदम्बा की याद करता है. गौरी के रक्त नयन एवं सभी देवताओं के सम्मिलित तेज से मातृभूमि का प्रतिपादन होता है और वे उसे चण्डिका का रूप प्रदान कर अस्त्र-शस्त्र भेंट करते हैं. यही दुर्गा दानव महिषासुर का मर्दन करती है. शक्ति का शुंभ-निशुंभ और उसके सहायक दानवों से भी युद्ध होता है, पर

अन्त में शक्ति की विजय होती है. ये निशाचार देवी दुर्गा का पाणिग्रहण करना चाहते हैं परन्तु वे अपने इस उद्देश्य में असफल ही नहीं होते वरन युद्ध क्षेत्र में मरे भी जाते हैं. इस प्रकार अपनी सामूहिक शक्ति से देवता दैत्यों से मुक्ति प्राप्त करते हैं और काफी समय उपरान्त उन्हें स्थायी शान्ति प्रदान होती है ।

समीक्षा

मैथिलीशरण गुप्त का " शक्ति " खण्डकाव्य संवत् 1984 एवं विश्वनाथ पाठक की " रणचण्डी " सन् 1961 की रचना है । शक्ति स्वतंत्रता पूर्व एवं रणचण्डी स्वतंत्रता के उपरान्त लिखी गयी है. दोनों का ही आधार " दुर्गा सप्तशती " [67] एवं दानव संग्राम ही है. प्राचीन कवियों ने नारी के सौम्य, शील, संकोच और लावण्य की महिमा मुक्त कंठ से गायी है परन्तु उसके तेजस्वी और प्रचण्ड रूप की ही ओर उनका ध्यान नहीं गया. नारी अबला नहीं वह जगदम्बा है, महाशक्ति है. विश्व की समस्त शक्तियाँ उसी के गर्भ से उद्भूत होती हैं. यदि वह जन्म देने की अधिकारिणी है तो संहारकारिणी भी, सौम्यरूपा लक्ष्मी है तो करास वदना काली भी.

" रणचण्डी " की भूमिका में श्यामनारायण पाण्डेय ने लिखा है --

" नारी का मातृत्व उसके गृहिणीत्व से महान् है. दुर्गा सप्तशती से हमें यही संदेश मिलता है. माता शक्ति का उद्गम है और गृहणी शक्ति का व्यय. शुंभ और निशुंभ जिस महाशक्ति को गृहिणी के रूप में न पा सके उसे देवताओं ने माता के रूप में प्राप्त कर लिया. कविवर विश्वनाथ पाठक ने दुर्गा सप्तशी की इसी कथावस्तु से प्रभावित होकर, उसी के पात्रों का सहारा लेकर हुंकार भरे छन्दों में

" रणचण्डी " नामक खण्डकाव्य प्रस्तुत किया है. [68] " शक्ति " खण्ड काव्य भी शक्ति स्तवन है और दुर्गा के महात्म्य का वर्णन इसका एक मात्र उद्देश्य है. " मंगलाचरण " करके प्राचीन परम्परा को भी कवि ने प्रतिष्ठित रखा है. मार्मिक प्रसंगों में दुर्गा की तरफ शुंभ- निशुंभ का आकर्षित होना, अफसरों का डरना आदि प्रसंग भी आते हैं. यह दोनों खण्डकाव्य ही दुर्गा के प्रति भक्ति के ही प्रमाण हैं. जैसाकि " रणचण्डी " के रचयिता ने स्वयं स्वीकार किया है..

" दुर्गा का नाम सुनता हूँ तो माता की स्मृति आ जाती है, उनकी प्रतिमा देखता हूँ तो प्रतीत होता है कि चिरकाल से विमुक्त मेरी स्नेह-मयी माँ मेरे सम्मुख आकर खड़ी हो गयी है. उस समय मेरे हृदय का सारा अहंकार, सारा कालुष्य अश्रुओं की त्रिपथगा में धुल जाता है. ऐसा लगता है कि माँ अपने पावन अंचल से मेरे आँसू पोंछ रही हैं. श्रद्धा से मेरा मस्तक चरणों पर झुक जाता है और शनैः शनैः महाचिति का वरदपाणि मेरे ऊपर उठ करके मुझे अभय-दान देने लगता है. बहुत दिनों से इच्छा थी कि देवी की पावन गाथा हिन्दी में लिपिबद्ध करूँ. " रणचण्डी " उसी इच्छा का परिणाम है. " [69]

इसकी एक विशेषता यह है कि इसमें साहस, धैर्य और विरता के उदात्त प्रसंगों की अवतारणा हुई है. अपनी कल्पनाशक्ति के द्वारा दुर्गा चरित्र के गायन में अत्याधिक सहायता ली गयी है. इन कृतियों के सम्यक अनुशीलन से यह दृष्टिगोचर होता है कि ये खण्डकाव्य इन कवियों की कल्पनाशक्ति, अध्ययनशीलता एवं शिल्प कला का ही परिचय दिया है. यह किसी वाद का परिणाम प्रतीत नहीं होती बल्कि भारतीय संस्कृति के पावन ग्रंथ कहे जा सकते हैं.

चरित्र चित्रण

इन दोनों खण्डकाव्यों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण पात्र दुर्गा है. अन्य पात्र उसके चारित्रिक गौरव का उद्घाटन करने के लिए प्रयुक्त हुए हैं. इनमें पूर्णतया पौराणिक चेतना है.

दुर्गा का सौन्दर्य अत्याधिक मनोहर है उसके बाह्य रूप से तेज टपकता है. कवियों ने उसकी सुन्दरता का वर्णन बड़े ही मनोरम शब्दों में किया है. [70] जगदम्बा में नारी की कोमलता ही नहीं पुरूषों जैसी कठोरता भी है. जहाँ शक्ति सुकुमार गहनों से सुसज्जित है वहाँ वीर वेश में भी कम मोहन नहीं दिखती. जन्मजात दुर्गा में वीरत्व का समावेश परिलक्षित होता है. [71]

दुर्गा अत्याधिक दूरदर्शी है. शुम्भ के दूत से यह कहना कि विधि ने मांग का सिंदूर ही नहीं लिखा और मैंने प्रतिज्ञा भी की है कि जो साहस और वीरता से धनुषवाण हाथ में लेकर रण में मुझे जीतेगा उसे ही मैं अपना पति स्वीकार करूँगी. इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है । [72] सिंहवाहिनी दुर्गा दूरदर्शी ही नहीं वीर भी है. वह नारी होने के फलस्वरूप भी अपने को अबला नहीं समझती और यही भावना कर प्रगटाव शुम्भ से भी करती है. [73] वस्तुतः इस चरित्रांकन में कवि की किसी मौलिकता के दर्शन नहीं होते.

दुर्गा माता सबको अभयदान देने वाली और दुःख हरने वाली है, वह महाकाल की महाशक्ति, रण में काली का प्रतिरूप, मुण्ड चबाने वाली, बर्छी, कटारों, तलवारों एवं वैरी के हाहाकारों में शक्ति को संतोष होता है. वह भक्तों का त्राण करने वाली और दुष्टों का संहार करने वाली हैं ।

रस
==

" शक्ति " एवं " रणचण्डी " में आद्यंत रण चर्चा है अतः वीर रस के चित्रण की आशा की जा सकती है और यह युद्ध वर्णन अधिकतर शस्त्र संचालन तक ही सीमित है. वीर के सहायक रूप में भयानक भी आया है. प्रारंभ में करुण एवं शृंगार का भी पुट दृष्टिगोचर होता है परन्तु यह भावना दब सी गयी प्रतीत होती है , महिषासुर का बध करती हुई महाशक्ति का चित्र तो अत्यन्त सजीव एवं आकर्षक है जिसमें वीर रस का पुट है. दुर्गा के दानवों के झुण्डों के मुकाबला करने, उसके युद्ध कौशल के समय भी वीर रस दृष्टिगोचर होता है. [74] महिषासुर की हुंकार में एवं राक्षसों और महाशक्ति के युद्ध वर्णन में वीर रस का परिपाक भी दृष्टिगोचर होता है--

" गरजी हट्टहास कर अम्बा देख ठट्ठ के ठट्ठ,
दहल उठे जल-थल अम्बर तल घटा विकट संघट्ट । " [75]

यहाँ राक्षस आलम्बन एवं शक्ति आश्रय है. राक्षसों का अहु संख्या में एकत्रित होना तथा उनकी विकरालता उद्दीपन है. चण्डी का हट्टहासपूर्ण गर्जन तथा युद्ध में रिपु दलन अनुभाव है. राक्षसों के पूर्व कृत्यों की स्मृति एवं धैर्य संचारी है, उत्साह स्थायी भाव के रूप में व्यक्त हुआ है. वीर रस के साथ-साथ " शक्ति " राष्ट्रीय मनोभावना का काव्य है. शक्ति के महात्म्य वर्णन द्वारा कवि ने अपनी शक्ति भावना भी अभिव्यक्त की है और उसके साथ ही शक्ति के माध्यम से यह व्यंजना भी की है कि भारतवासियों के विदेशी शासन के परतंत्रता पाश में संगठित जनशक्ति के द्वारा ही मुक्ति हो सकती है. परतंत्र परतंत्र देश को कवि ने आशान्वित संदेश दिया है. भारती जन शक्ति पर भी यह रूपक घटित हो सकता है. यथा..

" संघशक्ति ही कलि- दैत्यों का मेटेगी आतंक " [76]

" रणचण्डी " में देवताओं और निशाचारों के संग्राम में शुम्भ निशुम्भ की वीरता का मूर्तमान रूप ,[77] असुर नाशिनी काली का रूप अत्यन्त भयावह है. किन्तु उनमें वीरत्व का दर्प उससे भी सशक्त है --

" मैं काली खप्पर वाली हूँ, मैं लेती हूँ रण का दान ।
हाड़ चबा लेती हूँ अरि का, और रुधिर करती हूँ पान ।।
चलती हूँ असि की धारा पर,करती हूँ शठ का आखेट ।
हो जाती हूँ तुष्ट उसी पर,जो शोणित से भर दे पेट ।। "[78]

इन चारों खण्डकाव्यों " तुमुल ", " जयहनुमान ", शक्ति ", " रणचण्डी " के अनुशीलन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इन चारों का संबंध राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रत्यक्ष रूप से नहीं स्थापित होता. ये चारों ही भक्ति के फलस्वरूप प्रकाश में आये हैं. एक मात्र " शक्ति " में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संचालित राष्ट्रीय आन्दोलनों का रूप संघ के रूप में दर्शाने का प्रयास किया गया है ।

समग्र मूल्यांकन

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि इस आलोच्य काल में आने वाले ऐतिहासिक, पौराणिक खण्डकाव्य हैं जिनकी संख्या सोलह है. जैसाकि पूर्ववर्ती विवेचन में हम यह स्पष्ट कर चुके हैं कि ऐतिहासिक संदर्भ के दृष्टिकोणसे ये कथानक उत्तर- पश्चिम के तुर्क, अफगान आक्रमणों से लेकर आरंभिक मुस्लिम राजवंशों की भारत में प्रतिष्ठा के काल खण्ड तक सीमित हैं. " सिद्धराज ", " सिंहद्वार " , " विकट भट ", " गोराबध ", आदि काव्यों के

रचयिता अस्तित्व के लिए संघर्षरत राजपूत वीरों की अत्यधिक शक्ति के माध्यम से सम सामयिक राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत संघर्षों को नयी चेतना देना चाहते हो एवं " प्राणार्पण " एवं " स्वतंत्रता की बलिवेदी " नामक खण्डकाव्य की राष्ट्रीय आंदोलनों से ग्रहीत प्रेरणा स्वयं सिद्ध है क्योंकि " प्राणार्पण " में अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी के बलिदान एवं द्वितीय में जलियाँवाले बाग से लेकर सन् 1942 तक की आतंकवादियों एवं सत्याग्रहियों की घटनायें समाहित हैं. इसके रचयिताओं ने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्वातंत्र्य चेतना को ही उभारने का सफल प्रयास किया है. " सूली और शान्ति " में तो पड़ोसी राज्य पाकिस्तान की सन् 65 के युद्ध और भारतीय वीरों की देश से रक्षा के लिए संघर्षरत रहने का वर्णन कवि ने बड़ी ही ओजस्वी वाणी में किया है ।

इसके विपरीत पौराणिक खण्डकाव्य प्रायः समसामयिक राष्ट्रीय चेतना से उतने नहीं जुड़ पाये हैं, जितने ऐतिहासिक खण्डकाव्य. अनेक की प्रेरणा तो विशुद्ध कवि की निजी-धार्मिक चेतना ही रही है. केवल यही कहा जा सकता है कि नव-जागरण ने राष्ट्रीय आन्दोलन के दिनों में भी भारतीय मनीषा को उज्जवल अतीत के गौरव गान की ओर आकर्षित किया और ये काव्य उक्त अतीत के प्रति आकर्षण का साक्ष्य उपस्थित करते हैं. कला की दृष्टि से ये सामान्य कोटि की कृतियाँ हैं किंतु महाभारत के कथानक पर आधारित काव्यों की चेतना अन्यों की अपेक्षाकृत उत्कृष्ट है. अतः यह कहा जा सकता है कि पौराणिक काव्य यद्यपि राष्ट्रीय चेतना से जुड़े हुए प्रतीत नहीं होते तथापि वे कुछ अंश तक सांस्कृतिक पुनर्जागरण की चेतना से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं. आलोच्य युग में आने वाले खण्डकाव्यों के माध्यम से कवि ने पूर्ववर्ती महाकाव्यों की भाँति उसी चेतना को अग्रसर करने का प्रयास किया है कि व्यक्ति अपने जाति या वंश के

माध्यम से श्रेष्ठ नहीं होता उसके कर्म ही उसे महान बनाते हैं. " सेनापति कर्ण ", " कर्ण ", एवं " रश्मिरथी " जैसे खण्डकाव्य इसके उदाहरण हैं. देवी दुर्गा के माध्यम से नारियों की शक्ति को भी दर्शाने का सफल प्रयास किया है.

प्रस्तुत अनुशीलन के संदर्भ में लेखिका का विनम्र मंतव्य है कि आधुनिक युग में जो लगभग सोलह खण्डकाव्य आते हैं उनमें से श्री श्यामनारायण पाण्डेय, मलखानसिंह सिसौदिया, विश्वनाथ पाठक, जगन्नाथ प्रसाद " मिलिन्द ", केदारनाथ मिश्र " प्रभात ", जीवन शुक्ल जैसे कृतिकारों को काव्यों में स्थान दिया गया है. वस्तुतः कवि विशेषको अध्ययन का आधार बनाने यही स्थिति संभाव्य थी. यह अनुशीलन इस तथ्य को प्रकाशित करता है कि आधुनिक काव्यधारा में खण्डकाव्यों की कोटि में लगभग सोलह रचनाओं का अस्तित्व हिन्दी वीर काव्य परम्परा को एक सशक्त एवं महत्वपूर्ण काव्यधारा के रूप में स्थापित करता है. मुक्तकों की संख्या इससे कहीं अधिक है जिन पर परवर्ती अध्याय में विचार किया जायेगा.

संदर्भ सूची

1. सिद्धराज, विवेचन, पृ. 3.
2. वही, पृ. 3.
3. वही, पृ. 3,4.
4. मैथिलीशरण गुप्त, सिद्धराज, पृ. 25.
5. वही, पृ. 30.
6. वही, पृ. 73.
7. वही, पृ. 44,45.
8. वही, पृ. 47.
9. सिंहद्वार, प्रथम संस्करण : अथ : पृ. 9.
10. वही, पृ. 40.
11. वही, पृ. 46-47.
12. वही, पृ. 49.
13. वही, पृ. 50.
14. वही, पृ. 87.
15. वही, पृ. 83.
16. वही, पृ. 84.
17. वही, पृ. 85.
18. गोरा बध, पृ. 63.
19. वही, पृ. 38.
20. वही, पृ. 64.
21. बालकृष्ण शर्मा " नवीन ", प्राणार्पण, प्रस्तावना : द्वितीय गति, छन्द-1, पृ. 2.
22. वही, पृ. 18.
23. प्राणार्पण, पृ. 1 छंद 35.

24. प्राणार्पण, पृ. 25, छंद 24.
25. वही, पृ. 30, छंद 46.
26. वही, पृ. 39, छंद 22.
27. वही, पृ. 44, छंद 37.
28. वही, पृ. 38, छंद 20.
29. वही, पृ. 67. छंद 16.
30. वही, पृ. 84, छंद 55.
31. वही, पृ. 32, छंद 4.
32. जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद " स्वतंत्रता की बलिवेदी " संस्करण 1972, भूमिका पृ. 4-5
33. वही, पृ. 5.
34. वही, पृ. 6.
35. स्वतंत्रता की बलिवेदी, पृ. 86.
36. वही, पृ. 93.
36.(ए) मलखान सिंह सिसौदिया, सूली और शान्ति दृष्टिकोण और अभिमत, पृ. 5.
37. सूली और शान्ति, पृ. 39.
38. वही, पृ. 107.
39. वही पृ. 108.
40. वही, पृ. 41.
41. वही, पृ. 113.
42. स्वतंत्रता की बलिवेदी, भूमिका, पृ. 6.
43. दिनकर, रश्मिरथी, भूमिका, पृ. ग
43.(ए) वही, पृ. ग.

44. हमें इस ग्रंथ को प्रकाशित करते हुए प्रसन्नता भी हो रही है और संकोच भी. प्रसन्नता इसलिए है कि हम हिन्दी के पाठकों को ऐसी उत्कृष्ट काव्य कृति भेंट कर रहे हैं और संकोच इसलिए कि बहुत चाहते हुए भी इस महाकाव्य के अन्तिम सर्ग हम नहीं पा सके रहे हैं. वास्तव में अन्तिम सर्ग लिखे ही नहीं गये.

-- सेनापति कर्ण, प्रकाशकीय अभिवचन.

45. केदारनाथ मिश्र प्रभात, कर्ण पृ. 48, तृतीय सर्ग.
46. वही, पृ. 58, चतुर्थ सर्ग.
47. दिनकर : रश्मिरथी, पृ. 136.
48. वही पृ. 49, 58 एवं केदारनाथ मिश्र प्रभात, कर्ण पृ. 38.
49. लक्ष्मीनारायण मिश्र, सेनापति कर्ण [मंत्रणा] पृ. 46.
50. दिनकर, रश्मिरथी, पृ. 134.
51. तुलसीदास, रामायण, लंकाकाण्ड, पृ. 558.
52. श्यामनारायण पाण्डेय, तुमुल, पृ. 4.
53. वही तुमुल, प्रार्थना, पृ. 6.
54. वही, पृ. 5.
55. तुमुल, पृ. 76-77.
56. वही, पृ. 64.
57. वही, पृ. 66.
58. वही, पृ. 9, 11.
59. वही, पृ. 54.
60. वही, पृ. 64.
61. वही, पृ. 39.
62. वही, पृ. 114.
63. वही, पृ. 73.
64. जयहनुमान, पृ. 74.

65. जय हनुमान, पृ. 61.

66. वही, पृ. 61.

67. रणचण्डी, भूमिका, पृ. 2

68 . वही, पृ. 4.

69. वही, दो शब्द, पृ. 5.

70. वही, पृ. 30 एवं शक्ति, पृ. 9.

71. रणचण्डी , पृ. 45 एवं 25 एवं शक्ति, पृ. 14.

72. वही, पृ. 62- 64.

73. वही, पृ. 74.

74. शक्ति, पृ. 12

75. वही, पृ. 12.

76. वही, पृ. 8.

77. वही, पृ. 11.

78. वही, पृ. 88.